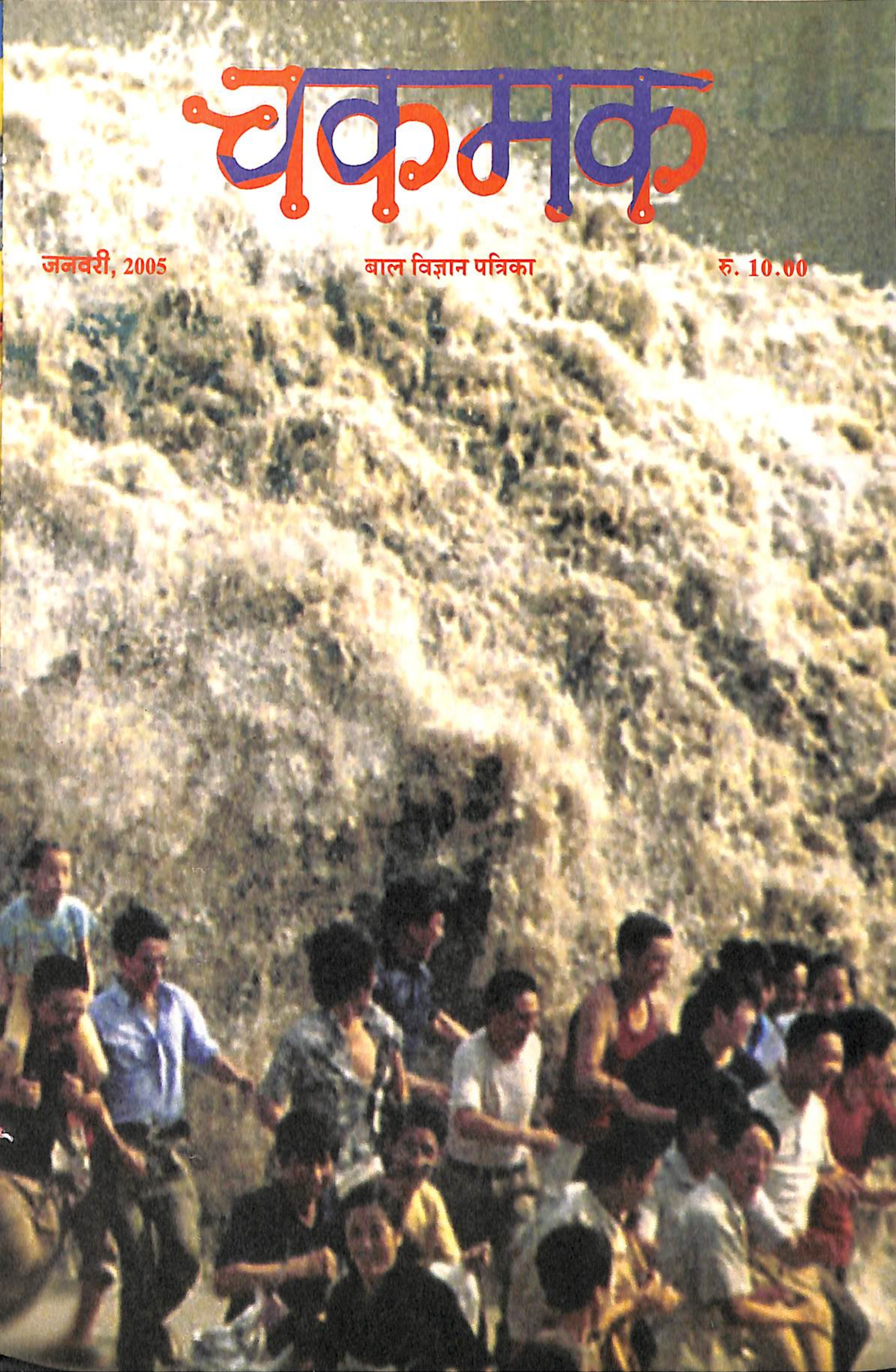
चकमक

जनवरी, 2005 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00





गुपत, खातेगाँव, देवास, म.प्र.



अवनीश सुनीता (पता नहीं लिखा)

इस बार की बात . . .

दोस्तो,

पिछले महीने सुनामी नाम का कहर आया। हज़ारों लोग हमसे छिने। यह हमारे लिए नई परेशानी थी। लेकिन कुछ देशों में सुनामी का आना इतना नया नहीं है। वहाँ इससे निपटने के कई साधन भी विकसित हुए हैं। कहते हैं अमेरिकी नौसेना को हिन्द महासागर की सुनामी का अंदेशा पहले ही हो गया था। अगर वे थोड़ी गम्भीरता से ये संदेश दुनिया के और देशों तक पहुँचा देते तो हमारे इतने लोग न मारे जाते।

खैर! चकमक कुछ नए कॉलमों के साथ तुम्हारे सामने है। अगले कुछ अंकों में भी तुम्हें कुछ नए कॉलम देखने को मिलेंगे। चकमक के कलेवर पर भी काम जारी है। हमारी कोशिश रहेगी कि अंक दर अंक चकमक और सँवरे!

नए और पुराने कॉलमों पर तुम्हारी राय जानने की मंशा से 'पाठक लिखते हैं' फिर से शुरू कर रहे हैं। एक कॉलम में तुम्हें 'इतिहास बदल देने वाले प्रयोगों' के बारे में मज़ेदार जानकारी मिलेगी। 'जब बच्चे थे मम्मी-पापा' में बड़ों के बचपन के वाकये पढ़ने को मिलेंगे। चित्र देखकर कविता-कहानी लिखने के शौकीनों के लिए भी एक कॉलम इसी महीने से शुरू कर रहे हैं। 'अजब-गजब' में तुम्हें दुनिया की विचित्र चीज़ों के बारे में जानने को मिलेगा। पिछले कवर के अंदर के हिस्से में तुम हर बार एक अनोखी चीज़ को रंगीन चित्रों के साथ देख पाओगे। 'चित्र पहेली' को तुम्हारी ही माँग पर चित्र और वर्ग पहेली कर रहे हैं। लेख भी हमने नए अंदाज़ में पेश करने की कोशिश की है। पिछले अंक में तुमने 'पुस्तक अंश' नाम का एक नया कॉलम पढ़ा होगा। इस कॉलम में हम किताबों के मज़ेदार अंश देंगे। अगर तुम्हारी नज़र में कोई ऐसा अंश हो तो ज़रूर भेजना। और हाँ चकमक की नई सामग्री तुम्हें कैसी लगी बताना। साथ ही अगर तुम किसी और विषय पर चकमक में पढ़ना चाहते हो तो बताना। इन दिनों तुम्हारी रचनाएँ बहुत कुछ कम मिल रही हैं। शायद तुम परीक्षा की तैयारी में लगे होगे। खैर! जब भी फुरसत मिले, कुछ लिख पाओ तो ज़रूर भेजना।

नया साल तुम सबका साल बने! इसी उम्मीद में,

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 20 - अंक-7 जनवरी 2005

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/ एच आई जी – 453

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल - 462 016 (म. प्र.)

फोन : 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

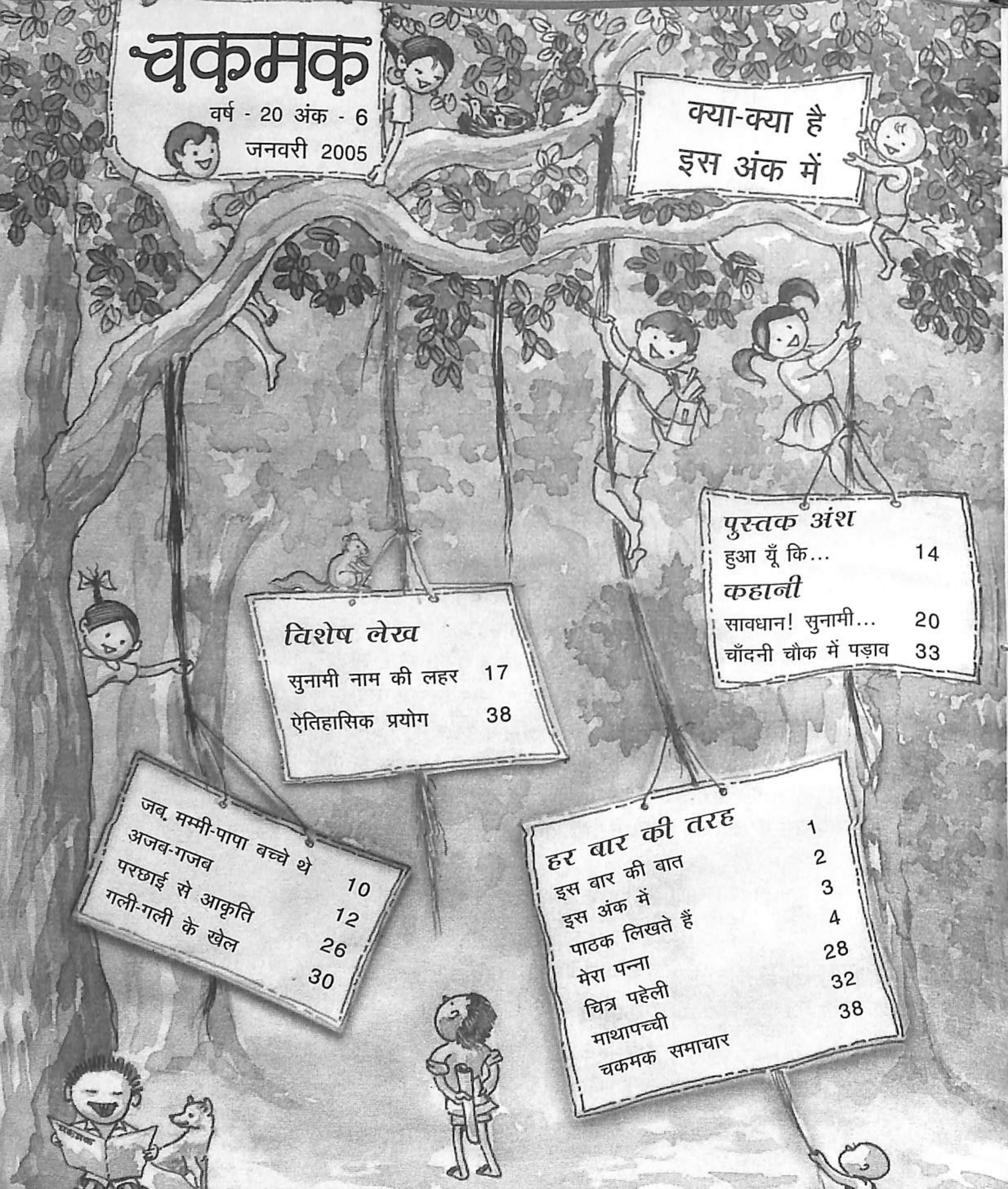
कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



चकमक

वर्ष - 20 अंक - 6
जनवरी 2005

क्या-क्या है इस अंक में

पुस्तक अंश

कहानी

विशेष लेख

हर बार की तरह

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



मैं बचपन से ही चकमक का पाठक रहा हूँ। चकमक का आवरण अन्य बाल पत्रिकाओं से सुन्दर व बढ़िया किस्म का होता है। पर कवर पर आकर्षक फोटो ही छापा करें। चकमक का प्रत्येक अंक एक विशेषांक होना चाहिए। चकमक में प्रतियोगिताएं, शोर्य कथाएं भी देनी चाहिए।

और हाँ, चकमक का आज से पाँच साल पहले छपने वाला अंक और आज का अंक एक समान लगता है। अतः इस पर विचार करना चाहिए। माथापच्ची और चित्र पहेली को छोटा किया जाना चाहिए।

- नकुल कुन्दरा, जालन्धर, पंजाब

मैं चकमक पुस्तक को बहुत रुचि से पढ़ता हूँ। मुझे इस किताब में कहानी पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। तथा चित्र पहेली भरना अच्छा लगता है। इसमें कई प्रकार के चित्र देखना मुझे अच्छा लगता है क्योंकि उन चित्रों से मुझे चित्रकला का ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें विभिन्न मौसमों में खेले जाने वाले खेलों के बारे में बताया जाना चाहिए।

- रंजीत सिंह राजपूत, होशंगाबाद, म.प्र.

मुझे चकमक बहुत अच्छी लगती है क्योंकि इसमें बड़ी मज़ेदार चीज़ें होती हैं जैसे गीत, कहानी, पहेली और चित्र। पहेली से मुझे याद आया कि पहेली के आप उत्तर नहीं देते। मेरा निवेदन है कि आप पहेली के उत्तर भी पीछे दे दीजिए। या फिर उत्तर का चित्र बना दें। जैसे पहेली का उत्तर है घड़ी तो घड़ी का चित्र बना दिया।

- तारा रस्तोगी, चौथी, भीमताल, उत्तरांचल

यूँ तो चकमक से कई सालों पुरानी जान-पहचान है। लेकिन पिछले कुछ समय से व्यस्तताओं के चलते इससे थोड़ी दूरियाँ बन गई थीं।

सौभाग्य से फिर चकमक पढ़कर दिल खुश हो गया। तसल्ली हुई कि चकमक अपने पुराने विचारों के साथ नए समय में आगे बढ़ रही है।

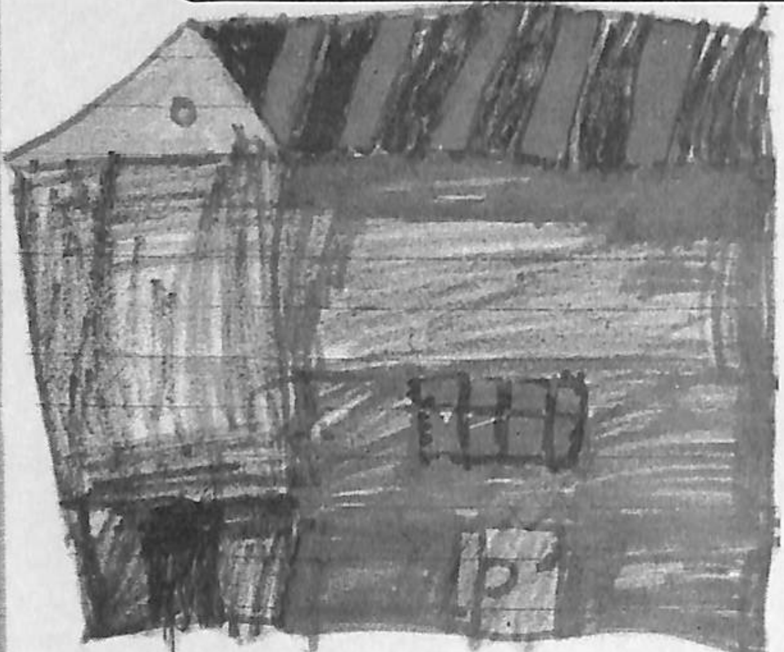
इसमें छपे लेख इसे संग्रहणीय बनाते हैं। मुझे खासतौर पर भोपाल, बाँस और ब्रेल पर लिखे लेखों ने काफी प्रभावित किया और इनसे कई रोचक जानकारियाँ भी मिलीं। कहानियों और कविताओं का चुनाव काफी अच्छा है। मुझे लगता है चित्रों से कहानी में जान आ जाती है। "पेड़ की परछाई की खरीदी," "क्यों" और "चाची का दाह संस्कार" इसके जीवंत उदाहरण हैं। मेरा पन्ना के 6 पन्ने तो बचपन में पहुँचा देते हैं। सच में यह बच्चों की मौलिक सृजनात्मकता और सरलता को सहेजने और आगे बढ़ाने की काफी अच्छी कोशिश है।

चित्र पहेली और माथापच्ची वास्तव में दिमाग पर ज़ोर डालते हैं। आपने सितम्बर, 04 के बाद से इनके जवाब देना बंद क्यों कर दिया? इसी से तो हम सही/गलत तय कर पाते हैं। इसके अलावा मुझे लगता है कि पिछले एक-दो अंक में माथापच्ची में कुछ गलत छप गया है।

वैसे तो चकमक भाषा और बच्चों के स्तर के हिसाब से काफी अच्छी है। लेकिन प्रूफ की छोटी-छोटी गलतियाँ भी न रहें तो बेहतर होगा। बच्चों की रचनाओं में इस तरह के सुधार की गुंजाइश न भी हो तो अन्य लेखों व कहानियों में तो इसका ध्यान रखा ही जाना चाहिए। चकमक केवल बच्चों की ही नहीं बल्कि उनसे जुड़े बड़ों की भी दोस्त है। इससे बच्चों की दुनिया को देखने का एक नज़रिया मिलता है। अपनी इसी दोस्त और इसके पूरे परिवार के लिए दुआ करती हूँ।

- चेतना खरे, देवास, म.प्र.

क्या तुम्हें मालूम है? तुम्हारे द्वारा भेजी गई रचनाएँ या चित्र यदि मेरा पन्ना में छपते हैं तो तुम्हें छह महीने तक चकमक बिल्कुल मुफ्त मिलेगी। तो हमें अपनी रचनाएँ और चित्र भेजना न भूलना!



एकता खत्री, पहली, भोपाल

दुर्घटना

5 साल पुरानी बात है। जब मैं अपनी घर की छत पर खेल रही थी। तब मेरी एक फ्रेण्ड ने मेरी चप्पलें छत की मुंडेर पर रख दी थीं। मैं उसे लेने के लिए गई तब मेरा पैर फिसल गया और मैं नीचे गिर गई। उस समय एक औरत ने मुझे गोद में ले लिया और वे घर ले गई। उन्होंने मेरे मुँह पर पानी छींटा, पानी भी पिलाया। फिर वे मेरे घर पर छोड़ने गई। तब मेरी मम्मी बहुत रो रही थी तथा मोहल्ले वाले इकट्ठे हो गए। जब मेरे पापा ऑफिस से आए तब मुझे डॉक्टर के यहाँ ले गए। डॉक्टर ने मेरा एक्सरे करा तो उसमें कुछ नहीं आया। मेरी फ्रैंण्ड ने मुझसे माफी माँगी। जब मैं अच्छी हो गई तब मेरी मम्मी-पापा मुझे घुमाने अजमेर ले गए। वहाँ पर मैंने गरीब नवाज की दरगाह देखी और तारागण देखा और बहुत सी चीजें देखी।

बुशरा शेख, नौवीं, मोहसिनपुरा, देवास, म.प्र.

पहेलियाँ

1.

छूने में शीतल, सूरत में लुभानी
रात में मोती, और दिन में पानी।

2.

टोपी है हरी मेरी, लाल है दुशाला
पेट में अजीब लगी, दानों की माला

3.

कौन सा ऐसा पेड़ है
जिसमें लकड़ी नहीं है।

4.

खरीदने पर काला, जलाने पर लाल
फेंकने पर सफेद, कैसा है कमाल

5.

एक पहेली सदा नवेली
जो बूझे सो जिन्दा
जिन्दा में से मुर्दा निकले,
मुर्दे में से जिन्दा।

- वैशाली सिंह, आठवीं,



लोरी, पहली, नई दिल्ली

चलता चाँद

चाँदनी रात थी। मैं अपने मम्मी-पापा के साथ लखनऊ से घूमकर फैज़ाबाद लौट रही थी। मैं चाँद को देख रही थी। कुछ देर बाद मुझे आश्चर्य हुआ कि जैसे-जैसे हम लोगों की गाड़ी बढ़ रही है वैसे ही चाँद भी बढ़ रहा था। मुझे यह बहुत विचित्र लगा। फिर मैंने अपनी मम्मी से पूछा कि मम्मी चाँद भी चलता है, तो मेरी मम्मी ने कहा कि चाँद बहुत ही ऊँचाई पर होता है इसलिए हमें लगता है कि चाँद भी हमारे साथ चल रहा है।

शुभि रस्तोगी, जे.बी.ए. फैज़ाबाद, उ.प्र.



सलमान खान, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

हमको क्या विचित्र लगा

जब मैं छोटा-सा बच्चा था तब मुझको सबसे विचित्र चीज़ लगती थी कि जब हम लोग कुछ भी चीज़ आसमान की ओर फेंकते हैं तो वह चीज़ वापस कैसे आ जाती है। और कुछ चीज़ें ऐसी भी थीं कि जो गिरने के बाद वापस ऊपर उछलती थीं। मैं सोचता था कि जैसे चाँद, तारे, बादल, सूरज आदि ऊपर ही कैसे रहते हैं, नीचे क्यों नहीं गिरते हैं। अब जब मैं बड़ा हो गया हूँ तो मुझे पता है कि वे चीज़ें क्यों नीचे वापिस आ जाती हैं और चाँद, तारे, बादल तथा सूरज आदि नीचे क्यों नहीं गिरते हैं।

देवाल अग्रवाल, चौथी, जे.बी.ए. स्कूल, फैज़ाबाद



सपना उल्टा-पुल्टा

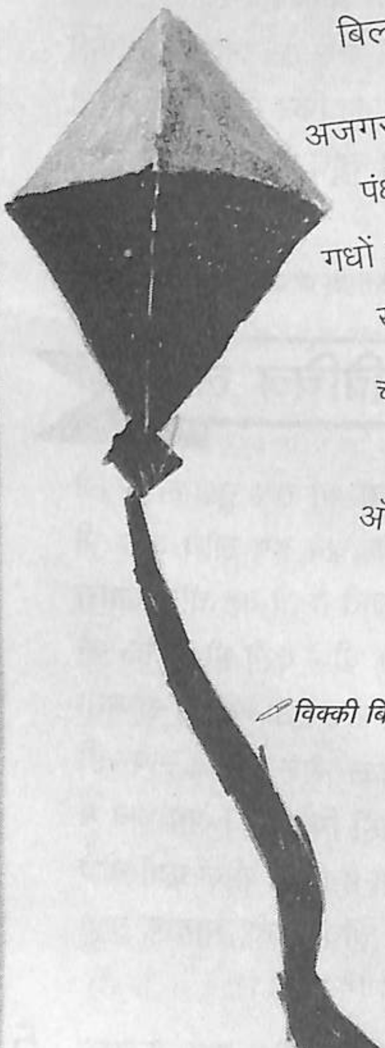
एक दिन हुआ बड़ा गजब
उल्टी-पुल्टी हो गई दुनिया
बड़े पहुँच गए स्कूल
दफ्तर को गए मुन्ने-मुनिया।

बकरी करने लगी शिकार
खाने लगे भेड़िए मार।
शेर बोले म्याऊँ-म्याऊँ
बिल्ली बोली तुझको खाऊँ।

अजगर साँप हवा में उड़ते
पंक्षी अब धरती पर चलते।
गधों का अब राज हुआ
खूनी मंत्री बाज हुआ।

चोर हो गए साहूकार
दुनिया भर में हाहाकार।
आँख खोली तो सपना उल्टा
कहीं न था उल्टा-पुल्टा।

विक्की बिल्लोरे, हरणगाँव, देवास, म.प्र.



तरुणेश पराशर, तीसरी, भोपाल, म.प्र.



रमा सोलंकी, (पता नहीं लिखा)

मैं गिर पड़ी

मैं जब स्कूल से घर आई तो खाना खाकर बैठी ही थी कि अचानक बारिश शुरू हो गई। मैं और मेरे छोटे भाई को बारिश में भीगने का मन हुआ। पर मम्मी से पूछने पर उन्होंने मना कर दिया। तब हमने उन्हें मनाने की कोशिश की। बहुत से चुटकुले सुनाए। गाना गाया। फिर भी नहीं मानी। मम्मी काम करके थक गई थी इसलिए थोड़ा आराम करने के लिए लेटी और आँख लग गई। मज़ाक करते हुए फिर पूछा, मम्मी जाएँ। मम्मी ने नींद में हाँ बोला की ना समझ में नहीं आया और मैं चिल्लाते हुए भागी, "मम्मी ने हाँ कर दी... मम्मी ने हाँ कर दी।" आगे जाकर मैं फिसली धड़ाम...... आह!.... मम्मी उठी और देखा। मेरा भाई और मम्मी इतनी ज़ोर से हँसे की आस-पास वाले भी मुझे देखकर हँसने लगे। मुझे रोने के साथ-साथ अपने ऊपर हँसी भी आने लगी। वो दिन मुझे आज तक याद है। हम सभी उस दिन को यादकर बहुत हँसते हैं।

जयविश खलखो, आठवीं, भोपाल, म.प्र.



मनोहर तोईके, आठवीं, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

गाँव का जीवन

क्यों नष्ट कर रहे हो तुम,
गाँव की हरियाली को।
यह गाँव ही तो है
जहाँ की हरियाली भाती है हर किसी को।

गाँव से प्राप्त होते हैं,
अनाज और अन्न शुद्ध चीज़ें।

आखिर क्या है शहर में,
जो आकर्षित कर रहा है आपको अपनी ओर।
गाँव का शुद्ध वातावरण अगर आपको न भाया,
तो वहाँ की हरियाली तो ज़रूर भाएगी,

परंतु, शहर में आपको क्या पसंद आया,
आपको तो वहाँ नींद तक नहीं आएगी,

विमल प्रतापसिंह, सातवीं, जे.बी. अकादमी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

मेरी पसंद

मैं नित्यसेवा सोसायटी में 4 साल से रहती हूँ। मुझे मेरा घर अच्छा नहीं लगता और मुझे मेरे माता-पिता की याद भी नहीं आती। मुझे सिर्फ नित्यसेवा भवन अच्छा लगता है। मैं यहाँ पढ़-लिखकर डॉक्टर बनना चाहती हूँ। मेरे को यहाँ के सर और मैडम बहुत अच्छे लगते हैं। मेरे पिताजी बहुत शराब पीते थे और मुझे मारते थे। शराब पीकर मेरी मम्मी को बहुत मारते थे। मैं भी बहुत काम करती थी, तब भी मेरे पापा मुझे मारते थे। इसलिए मैं अपने भाई बहिन को लेकर नानी के यहाँ आ गई। मेरी नानी ने मुझे भगा दिया। तो मैं यहाँ नित्यसेवा सोसायटी में आ गई। मुझे खाने में आम और पनीर की सब्जी पुड़ी बहुत पसंद हैं।

शिवानी, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.

पापा का खाना

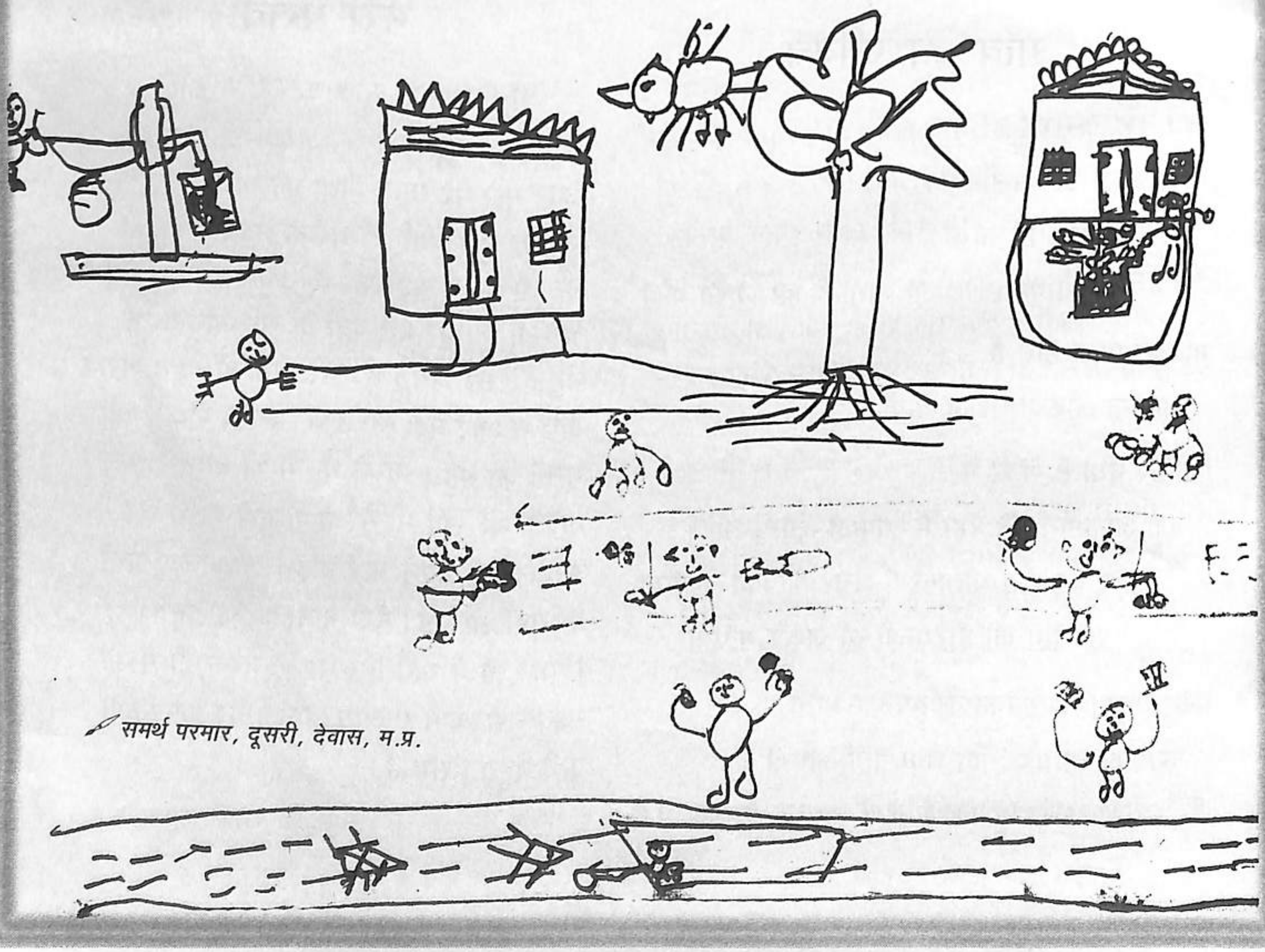
हम खाना खाकर, पापा का खाना लेकर खेत में जा रहे थे तो वहाँ जाकर हमने पापा से कहा कि पापा खाना खा लो। पापा खाना खाने लगे। वहाँ पर जाम का पेड़ था। उस पेड़ पर मीठे-मीठे जाम लगे थे। हम जाम खाने लगे। जाम खाकर हम नहाने के लिए नदी पर जा रहे थे। वहाँ पहुँचे तो हमने बंदर का झुण्ड देखा। वह पानी पी रहे थे। हमने बंदर का पीछा किया। बंदर पेड़ पर चढ़ गए। हमने बहुत कोशिश की पर हम उन्हें पकड़ने में नाकामयाब रहे। फिर हमने सोचा नहा लें और घर चले जाएँगे।

अतुल मीना पटरानी, पाँचवीं, देवास, म.प्र.

क्रिकेट

मुझे क्रिकेट देखना बहुत अच्छा लगता है। क्रिकेट में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। मुझे सबसे अच्छा खिलाड़ी राहुल द्रविड़ लगता है। जब वह छक्का मारता है तो मैं उछल पड़ता हूँ। यह क्रिकेट पूरे देश का होता है। सबसे अच्छा क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया खेलता है। क्रिकेट में तीन चीज़ों की ज़रूरत होती है पहला बैट, दूसरा बॉल और तीसरा विकेट।

राहुल कुमार, तीसरी, भोजपुर, आरा, बिहार



समर्थ परमार, दूसरी, देवास, म.प्र.

बड़ा चोर

उदयपुर में एक बहुत शातिर चोर था। उसका नाम शीतल था। उसके दोस्त भी चोर थे। लेकिन शीतल के मुकाबले कोई बड़ा चोर न था। एक बार शीतल कहीं चोरी करने जा रहा था तो रास्ते में उसे एक साधु मिला। साधू ने उससे पूछा, "बेटा कहाँ जा रहे हो?" शीतल बोला "मैं इधर ही घूम रहा हूँ।" साधू को शक हुआ। उसने पूछा, "तुम चोर तो नहीं हो?" शीतल ने सोचा, साधू बहुत ज्ञानी है। उसने हाँ कर दिया। तब साधू बोले- "बेटा, देवरिया में एक चोर है। उसका नाम बसंत है। उसके मुकाबले कोई चोर नहीं है। और अब वह चोरी नहीं करता। तुम भी चोरी करना छोड़ दो।"



शीतल के मन में विचार आया कि मुझसे बड़ा चोर कैसे हो सकता है? देखूँ तो क्या करता है, कि मुझसे भी बड़ा चोर है।

वह पूछते-पूछते उसके घर पहुँचा। बसंत ने उसकी सेवा की तथा आने का कारण पूछा। शीतल ने सब कुछ सच-सच बता दिया। बसंत बहुत खुश हुआ। रात को भोजन के बाद, बसंत ने सोने की मोहरों की एक थैली निकाली और बोला- "आज से पाँच साल पूर्व मैंने इन मोहरों को चुराया था और उनको अब तक बचाकर रखा है। पूरी 100 मोहरें हैं।" शीतल मन ही मन में भगवान को धन्यवाद देते हुए सोचा, इन मोहरों को मैं चुराकर ले चलूँगा। इनको चुराने से दो फायदे हैं। एक तो यह कि मैं धनी हो जाऊँगा और दूसरा, यह कि चोर के घर में चोरी करने से मैं और बड़ा चोर हो जाऊँगा। बसंत ने थैला वहीं सोने के कमरे में रख लिया।

शीतल सोने के लिए चारपाई पर लेट गया लेकिन उसे नींद कहाँ? वह बसंत के सोने का इन्तज़ार करने लगा। बसंत के सोने के बाद वह पूरे घर में सोने की मोहरें की थैली ढूँढने लगा। लेकिन वह उनको नहीं पा सका। थक हारकर वह सो गया।

सबेरे नाश्ते के बाद उसने बसंत को रात की सारी घटना बताई और पूछा- "थैला तुमने कहाँ छुपाया था?" बसंत बोला "अभी मैं उस थैले को लेकर आता हूँ।" बसंत उसी कमरे में से थैला निकालकर लाया। थैले को देखकर शीतल को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "यह कहाँ था?" बसंत ने कहा, "यह थैला तो तुम्हारे तकिए के नीचे ही रखा था। जब तुम सोने जा रहे थे तभी मैंने इनको वहाँ रख दिया। मैं जानता था कि तुम रात को इन मोहरों को चुराने की ज़रूर कोशिश करोगे। इसलिए इन्हें मैंने तुम्हारे तकिए के नीचे ही रख दिया था।"

यह लोककथा हमें अतुल कुमार राय, दसवीं, आजमगढ़, उ.प्र. ने भेजी है।

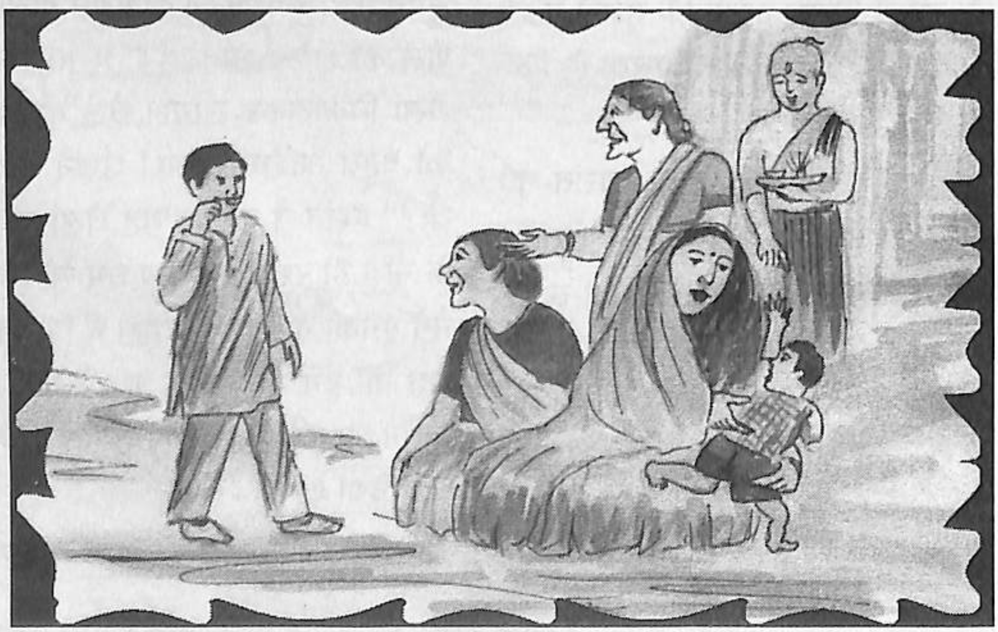
जब मम्मी-पापा बच्चे थे

ऐसे भी दिन हुए हैं जब मम्मी-पापा बच्चे हुआ करते थे हमारी तरह! हमारी तरह उन्हें भी डाँट पड़ती होगी। धमाचौकड़ी वे भी मचाते होंगे। वे भी हमारी तरह उदास और खुश हुआ करते होंगे। क्या मम्मी-पापा को वे दिन आज भी याद होंगे?

इस कॉलम में तुम सबके मम्मी-पापा के लिए एक मौका है उनके बचपन को याद करने का। उनसे कहना वे ज़रूर लिखें। अगर वे न लिखें तो उनसे सुनकर तुम्हीं लिख भेजना। हाँ, दादा-दादी, नाना-नानी के किस्से भी हो सकते हैं। इस बार एक पापा *नरेन्द्र कुमार* की शरारत...

बात पिपरिया की है। उन दिनों हम बच्चे थे और मिडिल स्कूल में पढ़ते थे। कक्षा की याद नहीं है। उन दिनों होमवर्क का इतना झंझट नहीं था। थोड़ी-बहुत पढ़ाई हम लोग बिना किसी टोका-टाकी के कर लेते थे। इसलिए खेलने-कूदने की पूरी छूट रहती थी। हम तो ऐसे थे कि कुछ ज़्यादा ही छूट ले लिया करते थे। मारपीट, धींगामस्ती, कई तरह के खेल और जो भी करने का मन हो, करके ही मानते थे। कई बार घर में अपनी बात मनवाने या कुछ ज़्यादा छूट पाने के लिए नाटक भी करना पड़ता था।

एक दिन शाम को हम खेलकूदकर घर लौटे। छुट्‌टी का दिन था और हम देर से गायब थे। उसपर वापस जाने की जल्दी थी कि दोस्तों की दूसरी पारी इंतज़ार कर रही थी। अब मुसीबत यह थी कि एक तो विरोधी बने माहौल को ठीक करना था और फिर गायब होने की तिकड़म भी भिड़ानी थी। जल्दी में सब गड़बड़ हो गया और हमारा दोबारा जाना खटाई में पड़ गया। अम्मा और बहनों ने वो डाँट लगाई कि क्या बताएँ।





कुछ समझ ही नंहीं आया कि क्या करें। उधर हमारे दोस्त भी जाने लगे थे। हमारी आजी यानी दादी ने हमारा पक्ष लिया, मगर बात न बनी। बुआ भी आई हुई थीं, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

जब किसी सूरत काम न बनता दिखा तो इक शरारत सूझी। हमारे घर के सामने एक हनुमान मंदिर था। मोहल्ले का वातावरण धार्मिक था। विशेष मौकों पर कुछ लोगों को देवता भी आ जाते थे। हम सब अक्सर देखा करते। घर के घमासान में जब मेरे अस्त्र चुकने लगे तो मुझे कुछ सूझा और मैंने आँखें चढ़ा लीं और सिर हिलाने लगा। आजी और बुआ मेरे पास थी। उन्होंने देखा कि अचानक इस लड़के को क्या होने लगा। बुआ ने झट मुझे अपनी गोद में लिया और दुलारने लगीं। लेकिन तब तक अपन पूरे मूड में आ चुके थे और अपने सिर पर 'देवता' या 'भूत', जो भी कहो, चढ़ गये थे।

आनन-फानन में यह बात पूरे मोहल्ले में फैल गई। बड़ी-बूढ़ी जानकार महिलाओं से हमारा आंगन भर गया। मैं बिलकुल ऐसा अभिनय कर रहा था जैसे सचमुच मेरे सिर पर भूत चढ़ गया हो। तभी किसी ने कहा, "यहाँ बैठे क्या उसके सिर से गण्डा-ताबीज़ उतार रहे हो, सामने मंदिर के हनुमान का सिंदूर लगा दो, सारे भूत भाग जायेंगे।" मुझे तुरंत उठाकर मंदिर ले जाया गया। सिर पर सिंदूर लगाने से पहले ही कुछ ऐसा हुआ कि उसकी नौबत ही नहीं आई।

मेरे पिताजी शहर में मामाजी के नाम से विख्यात थे। मंदिर के सामने मैं बुआ की गोद में मज़े से लेटा था। माथे पर सिंदूर मलने से पहले के टोने-टोटके हो रहे थे कि तभी किसी बुढ़िया ने कहा, "लो, मामाजी भी आ गए, अब चिंता की कोई बात नहीं है।"

"क्या?" मैंने झट से आँखें खोली और बुआ की गोद से उठकर गली में दौड़ लगा दी। उधर बुढ़िया कहने लगी। "अरे, इसके भूत तो मामाजी का नाम सुनकर ही उतर गए।"

चित्र - संतोष श्रीवास्तव

दिसम्बर 2004 अंक के हल

माथा पच्ची

1. 72 ईंटें
3. सिर्फ एक बार। क्योंकि अगली बार तो 25 में से घटाओगे।
4. 3 और 5
5. 4 नं.

चित्र पहेली

1 टे	ली	2 फो	3 न		4 द	5 र	वा	6 ज़ा
ब		7 टो	प		8 वा	स		य
9 ल	व		10 ता	बू	त		11 चौ	का
		12 इ				13 गो	द	
14 ता	15 ज	म	ह	ल		16 द	ह	ला
	17 ना	ली				ना		
18 म	ज़ा		19 ट	प	20 क		21 चा	22 क
ट		23 प	ख		24 ता	25 ला	चा	बी
26 का	र	खा	ना		27 र	ख		र

अजब गज़ब



नया साल मनाना कोई आजकल की बात नहीं है। आज से 4000 साल पहले बेबीलॉन में भी नया साल मनाया जाता था। लेकिन तब नया साल 1 जनवरी को शुरू नहीं होता था। उस वक्त बसंत ऋतु की पहली पूनम के दिन नया साल मनाया जाता था। बसंत में फूल खिलते हैं, फसलें बोई जाती हैं। इस हिसाब से नया साल मनाने का यह समय सही भी लगता है। आज तो नए साल का धूम-धड़ाका 31 दिसम्बर की रात को शुरू होता है। चार-पाँच घंटे चलता है और बस खत्म।

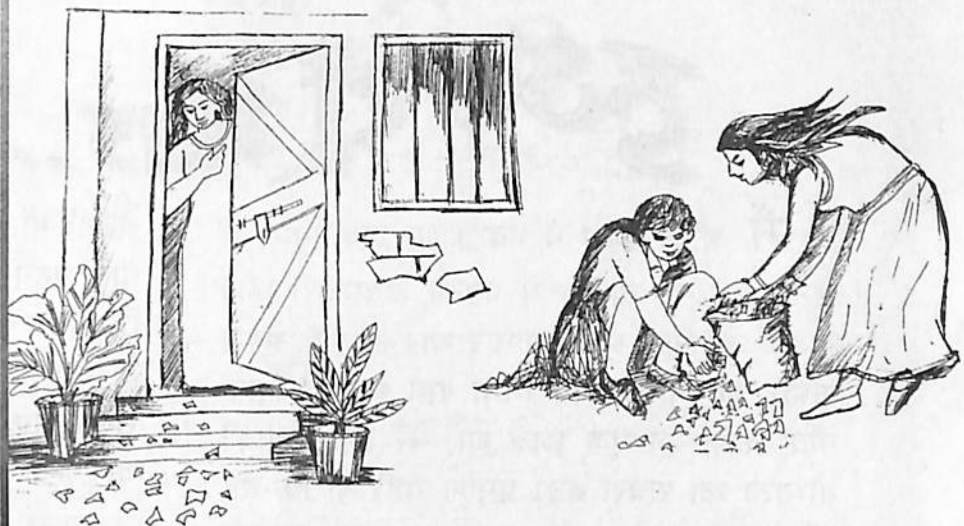
बहुत समय पहले रोम में मार्च के अन्त में नया साल मनाया जाता था। लेकिन ईसा से 153 साल पहले रोम शासक ने घोषणा की कि जनवरी 1 को नए साल की शुरुआत माना जाए। इस तारीख में छेड़छाड़ होती गई। गिरजा नहीं चाहता था कि रोमवासी नया साल मनाएँ। कई सारे देशों में नए साल के दिन छुट्टी मिलना तो अभी 400 साल पहले ही शुरू हुआ है।

कई सारे समाजों में माना जाता है कि आप साल के पहले दिन क्या खाते हैं इस पर आपका आने वाला साल निर्भर करेगा। उनका मानना है कि गोल छल्ले जैसी चीज़ खाना अच्छे भाग्य की निशानी है। क्योंकि यह एक चक्र पूरा होने की निशानी है।

ईसा से 600 साल पहले युनान में एक टोकरी में छोटे से बच्चे को लिटाकर घुमाया जाता था। इसे नए साल का जन्म माना जाता था। नया साल मनाने का यह तरीका गिरजा को पसंद आया। लेकिन वे इस बच्चे को ईसा मसीह के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे।



हमारे यहाँ काँच का बरतन टूटना भले ही बुरा माना जाता है लेकिन डेनमार्क वालों का सोचना हमसे थोड़ा अलग है। वे नए साल के पहले दिन अपने दरवाज़े पर काँच के टूटे टुकड़े पाने को शुभ सूचक मानते हैं। साल भर वे ऐसे टुकड़े जमा करते रहते हैं। ताकि अपने दोस्तों को नए साल पर यह उपहार दे सकें।



इक्वेडोर में परिवार के लोग अपना एक-एक कपड़ा मिलाकर आदमी का एक पुतला बनाते हैं। 31 दिसम्बर की रात 12 बजे का पहला घंटा बजते ही पुतले को जला दिया जाता है। यह नए साल में शुद्ध रूप से प्रवेश करना दर्शाता है।



नए साल में कुछ करना, कुछ छोड़ना जैसी कसमें खाना बहुत पुरानी बात है। ईसा से लगभग 153 साल पुरानी। रोम के एक पौराणिक राजा जैनस को इसका प्रतीक माना गया। जैनस के दो चेहरे थे। एक आगे यानी आने वाले समय की तरफ देखता हुआ और एक पीछे यानी बीते वक्त की ओर निहारता। आजकल तो नए साल में मोटापा कम करना, जमकर पढ़ाई करना जैसे प्रण किए जाते हैं। लेकिन बेबिलोन के लोगों की सबसे बड़ी चिन्ता पिछले साल लिए गए खेती के उपकरणों को वापस करने की होती थी।



चित्र - अशोक चंचल, विवेक वर्मा

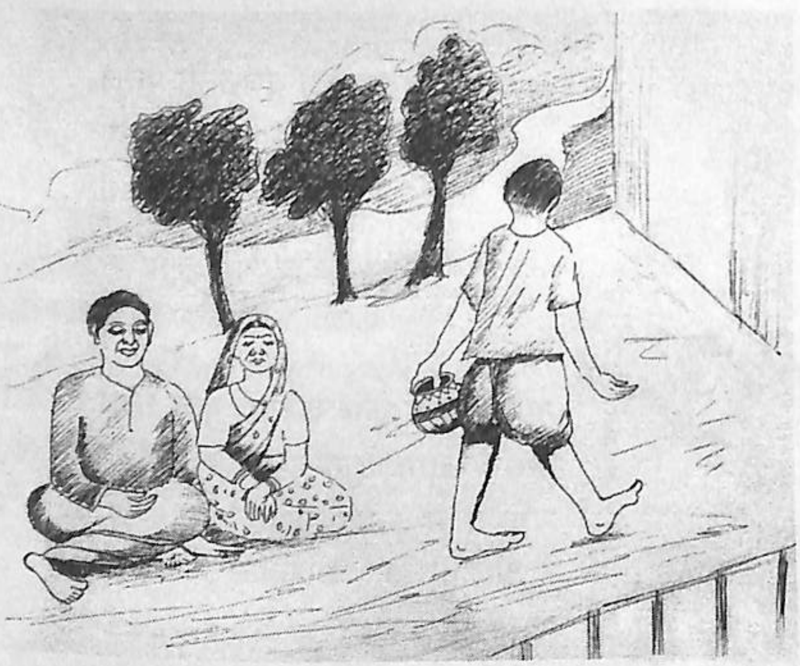
हुआ यूँ कि...



भीष्म साहनी

'आज के अतीत' भीष्म साहनी की आत्मकथा है। इसमें भीष्म साहनी ने अपने बचपन के किस्सों का पिटारा भी खोला है। इसी पिटारे से कुछ रोचक अंश छाप रहे हैं।

मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था जब स्कूल में खेले गए एक नाटक में पहली अदाकारी की। नाटक का नाम श्रवण कुमार था। और मैं श्रवण कुमार की भूमिका ही निभा रहा था। निर्देशक नौवी कक्षा का एक छात्र था, मेरे लिए उसकी योग्यता का सबसे बड़ा प्रमाण यही था कि वह आँखों पर चश्मा लगाए हुए था। मंच-सज्जा के लिए, उसके हुक्म पर हम सभी अदाकार अपने-अपने घरों से माँ-बहनों की धोतियाँ-साड़ियाँ उठा लाए थे - मंच पर बहती नदी दिखाने के लिए।

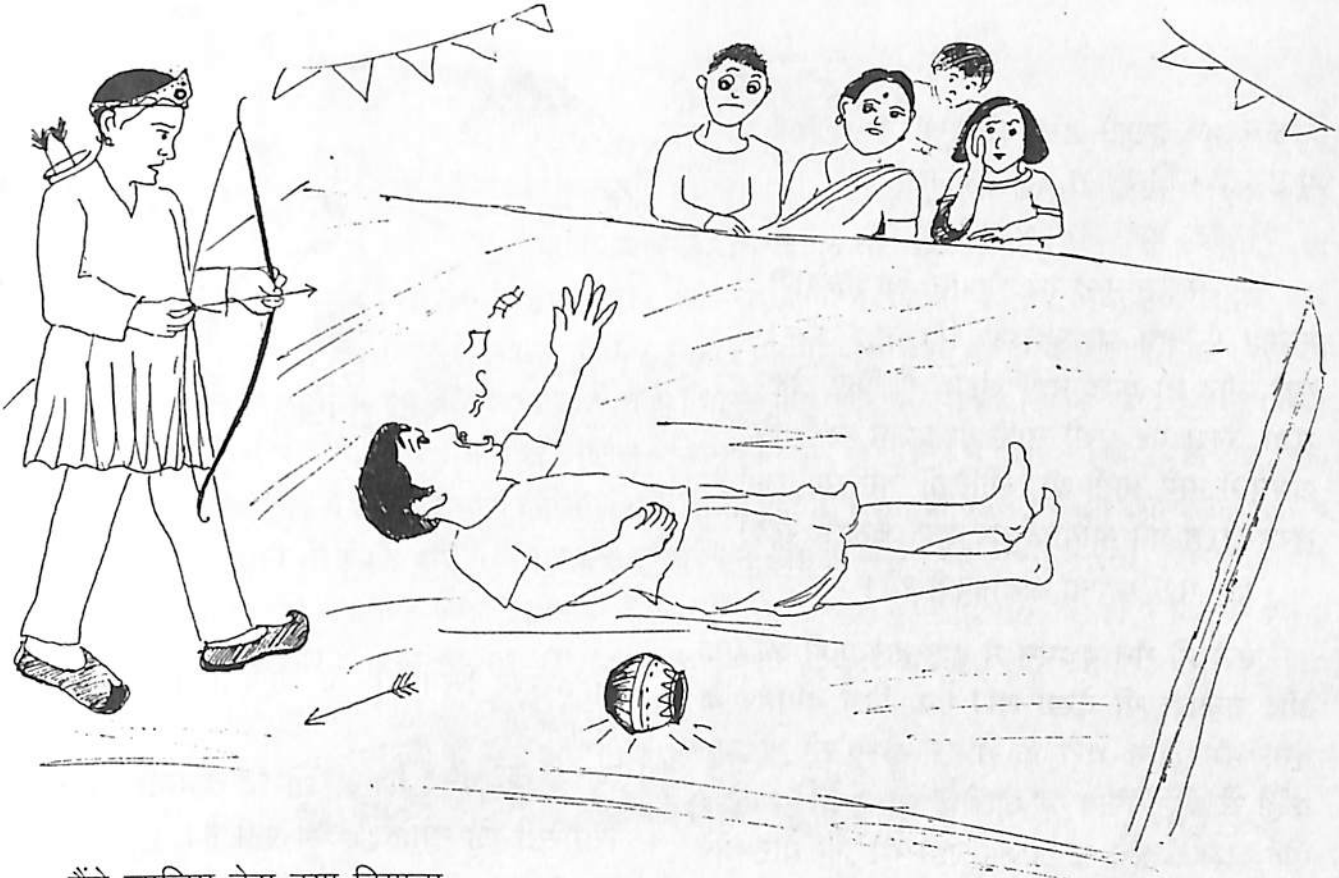


जहाँ गहरी रात गए श्रवण कुमार अपने अन्धे माँ-बाप के लिए पानी लेने जाता है। एक ओर को पानी की बाल्टी रख दी गई थी। दो लड़के, श्रवण कुमार के अन्धे माँ-बाप की भूमिका निभा रहे थे। उन्हें हिदायत दी गई थी कि सारा वक्त आँखें बन्द किए रहें और निर्देशक महोदय ने उन्हें मंच के ऐन बीचोंबीच, दर्शकों की ओर मुँह किए साथ-साथ बैठा दिया था। उनमें से एक, बोधराज, माँ की भूमिका निभा रहा था। वह अपनी माँ की ही धोती पहने हुए था जिसका पल्लू बार-बार सिर पर से खिसक जाता था।

पर्दा उठा। मैंने अन्धे माँ-बाप के आदेशानुसार "बेटा श्रवण कुमार, बहुत प्यास लगी है।" लोटा उठाया, चरण वन्दना की, और नदी की ओर चल पड़ा। उधर राजा दशरथ उछलता, पैंतरे बदलता अपनी मूँछों को ताव देता हुआ पर्दे के पीछे से मंच पर उतरा। पीठ पर बँधे तरकश में से नरसल का तीर निकाला और यह कहते हुए कि "कौन जानवर नदी के जल को गन्दा कर रहा है?" अपना तीर चला दिया।

तीर को मैंने सीधा छत की ओर जाते देखा, पर मैंने उसी क्षण लोटा फेंका, और चारों खाने चित्त स्टेज पर लेट गया और सप्तम स्वर में गाने लगाः





मैंने ज़ालिम तेरा क्या बिगाड़ा
तीर सीने में क्यों तूने मारा।
क्या ख़ता थी, बता, मेरी आखिर,
क्यों अभागे को जल भरते मारा?

मेरी आवाज़ सप्तम में चल रही थी कि जिस कारण हॉल में सकता छा गया। मैं बराबर गए जा रहा था पर गीत इतना लम्बा था कि खत्म होने में ही नहीं आ रहा था। उधर राजा दशरथ, एक पैर आगे, एक पीछे रखे, पोज़ बनाए, बिना हिले-डुले, मूर्तिवत् खड़ा था इस इंतज़ार में कि मैं गाना खत्म करूँ और उसे सम्बोधन करूँ। उसका तीर-कमान मेरी दिशा में स्थिर हो गया था। अगर वह एक और तीर तरकश में से निकालकर मेरी ओर चला देता तो बात बन जाती, पर उसे डायरेक्टर ने एक ही तीर चलाने को कहा था। और वह चल चुका था। मेरा गीत अभी आधा भी नहीं गाया गया था कि मेरी आवाज़ फटने लगी। किसी-किसी वक्त मुझे लगने लगा जैसे हॉल में बैठे दर्शक हँसने लगे हैं। उधर श्रवणकुमार के अन्धे माँ-बाप आँखें बन्द किए बैठ ही नहीं पा रहे थे, कभी एक तो कभी दूसरा, आँखें खोल देता जिसे देखकर दर्शक हँसने लगे थे। "वह देख, उसने फिर आँखें खोली हैं।"

सहसा हॉल में ठहाका हुआ। बोधराज के सिर पर से, जो अन्धी माँ की भूमिका में था, धोती का पल्लू खिसक आया था और नीचे से उसका घुटा हुआ सिर निकल आया था। फिर किसी ने ऊँची आवाज़ में कहा।

"वह देख, फिर से देख रहा है। उसने फिर से आँखें खोल दी हैं।"

हॉल में से बार-बार ठहाके उठने लगे। फिर बार-बार तालियाँ बजने लगीं। फिर जब मैंने गीत समाप्त करके, तड़पकर मरने का अभिनय किया तो हॉल में सीटियाँ बज रही थीं। और मेरी कक्षा का एक अध्यापक मेरे भाई बलराज से कह रहा था।

"यह तेरा भाई क्या कर रहा है?"

मेरी मृत्यु के बाद अभी और संवाद बोले जाने थे - बूढ़े माँ-बाप के साथ राजा दशरथ के संवाद, अन्धे माँ-बाप को अभी श्राप देना था पर नाटक का शेष भाग मैं भूल गया, और झट से

उठ बैठा। इससे हॉल में हँसी के फौवारे फूट उठे। किसी ने आवाज़ कसी :

"लेटा रह! लेटा रह!"

पर मैं इतना बेसुध हो गया था कि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मुझे और तो कुछ नहीं सूझा, मैं फिर लेट गया जिस पर ऐसी तालियाँ बजने लगीं कि थमने में नहीं आती थीं। सीटियाँ, तालियाँ, ठहाके तरह-तरह की आवाज़ें देर तक चलती रहीं।

यह मेरी पहली अदाकारी थी।



ऐसे ही मैंने बचपन में इश्तहारबाज़ी का एक और नज़ारा भी देखा था। एक दिन दोपहर के वक्त हम लोग घरों के बाहर खेल रहे थे जब कहीं से ढोल बजने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ एक चलते ताँगे में से आ रही थी जो धीरे-धीरे हमारे मोहल्ले में प्रवेश कर रहा था। हम लोग भागते हुए ताँगे की ओर गए। ताँगे में पिछली सीट पर दो आदमी बैठे थे। एक आदमी इश्तहार बाँट रहा था, दूसरे के हाथ में बड़ा-सा डिब्बा था। जब मैं ताँगे के पीछे पहुँचा तो डिब्बे वाले आदमी ने मेरी ओर एक डिबिया फेंकी। मैंने लपककर उठा ली।

मेरे हाथ में "कैंची" मार्का सिगरेट की डिबिया थी।

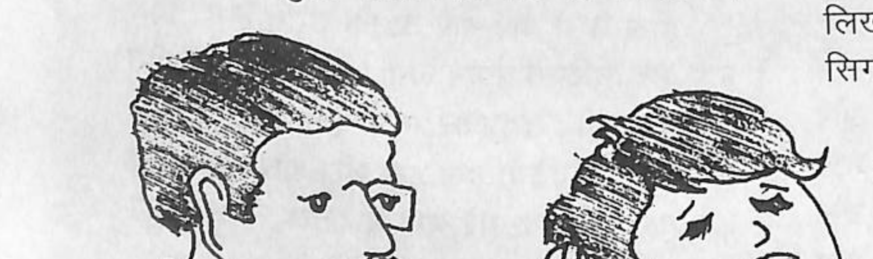
वे लोग मुफ्त में सिगरेट बाँट रहे थे। ताँगे में से बराबर सिगरेटों की डिबियाँ फेंकी जा रही थीं।

इश्तहार में लिखा था कि कमेटी मैदान में सिगरेटों की नुमाइश चल रही है।

"मनचाही सिगरेटों की डिबियाँ जीतो और मज़े लूटो!"

हम लोग वहाँ भी जा पहुँचे।

कमेटी के मैदान में एक बड़े से तम्बू के नीचे एक खेल चल रहा था। एक लम्बे-चौड़े मेज़ पर बहुत से लकड़ी के पुतले खड़े थे। एक पैसा देकर टिकट लो और बड़ा-सा गेंद उठाकर कुछ दूर रखे पुतलों को निशाना बनाओ। हर पुतले के नीचे नम्बर लिखे थे। अगर निशाना ठीक बैठे, पुतला मेज़ पर गिर जाए तो जो नम्बर नीचे लिखा है उतनी कैंची मार्का, रैड लैम्प मार्का सिगरेट की डिबियाँ जीत लो।"



मेज़ के सामने खेलने वालों की भीड़ लगी थी। सिगरेटों की लूट मची थी। सिगरेटों का मेला दस दिन तक रहा। दस दिन में ही मोहल्ले के बहुत से लोग सिगरेट फूँकते नज़र आने लगे। दो डिबियाँ तो मैं भी जीत लाया। पर सिगरेट सुलगाने की हिम्मत नहीं हुई। मेरे हाथ में सिगरेटों की डिबियाँ देखकर पिताजी ने मेरे कान उमेठ दिए थे और दोनों डिबियाँ नाली में फेंक दी थीं।



26 दिसम्बर 2004, इतवार की सुबह पता चला सुमात्रा में एक बड़ा भूकम्प आया है। काफी नुकसान हुआ है। फिर पता चला इंडोनेशिया के आसपास के द्वीप समूहों, थाइलैंड आदि कई देशों में बहुत ऊँची-ऊँची लहरें आई हैं। जिन्होंने तबाही मचा दी है। खबरें आती गई और तबाही वाले देशों की गिनती बढ़ती गई। अबकी सुमात्रा से हज़ारों किलोमीटर दूर बसे देश गिनती में थे। भारत और श्रीलंका भी इसमें जुड़ गए। अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों में, तमिलनाडु, पांडिचेरी, केरल के समुद्र किनारे के हिस्सों में विशाल लहरें आईं और एक-दो किलोमीटर तक चपेट में आई हर चीज़ को लील गईं। वो तो एक दिन बाद की खबरों ने इन लहरों का परिचय दिया - सुनामी। तुमने भी इनके बारे में सुना-जाना होगा। इन इलाकों में रह रहे अपने दोस्तों, रिश्तेदारों की खैरियत जानी होगी। हो सकता है कपड़े, दवाइयाँ, पैसे आदि से भी मदद की होगी। ये क्या होती हैं, क्यों इतना नुकसान पहुँचाती हैं और क्या इनसे बचा नहीं जा सकता। ऐसी ही कुछ बातें...

सुनामी नाम की एक लहर

भूकम्प कहीं भी आ सकते हैं। महाद्वीपों की ज़मीन में भी और समुद्र के तल में भी। ये जहाँ भी आएँ भारी नुकसान पहुँचाते हैं। ज़मीन पर आए बड़े भूकम्पों से मकानों, सड़कों आदि को बहुत नुकसान पहुँचता है। तो समुद्र के नीचे बड़ा भूकम्प आने से समुद्र का पेंदा कहीं ऊपर तो कहीं नीचे हो जाता है। इससे इस तल के ऊपर का पूरा का पूरा पानी भी ऊपर-नीचे हो जाता है। और बहुत बड़ी लहरें पैदा हो जाती हैं। यही सुनामी लहरें हैं। भूकम्प के अलावा कोई भी ऐसा कारण जो बहुत बड़ी मात्रा में पानी को अपनी जगह से उठा-पटक कर दे, सुनामी को जन्म दे सकता है।

सुनामी लहरें कुछ ही मिनटों में गहरे समुद्र से तेज़ी से किनारों की ओर बढ़ने लगती हैं। जेट विमान की सी तेज़ी से बहती इन लहरों में गजब की ऊर्जा होती है। वे गहरे समुद्र में हज़ारों किलोमीटर चलती हैं, बिना अपनी ऊर्जा और तेज़ी खोए। यहाँ इन्हें पहचानना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि यहाँ ये समुद्र तल पर 10 से 12 इंच से ज़्यादा ऊँची नहीं होती हैं। भूकम्प के केन्द्र के पास वाले क्षेत्रों में तो ये तत्काल पहुँच जाती हैं लेकिन दूर के किनारों तक पहुँचने में इन्हें कुछ घंटे लगते हैं।

तटों पर समुद्र की गहराई कम होती है। यहाँ इन लहरों की गति थोड़ी कम हो जाती है। लेकिन अचानक ये बहुत ऊँची उठ जाती हैं। पानी की एक तेज़ दीवार की तरह ये लहरें आती हैं और रास्ते में आई हर चीज़ को रौंद डालती हैं। समुद्र के तट से एक-दो किलोमीटर तक ये आगे बढ़ सकती हैं।

सुनामी से बचाव

तो क्या हमारे पास इन लहरों से बचने का कोई तरीका नहीं? नहीं, शायद हम इतने बेबस भी नहीं। जैसे जिन जगहों पर भूकम्प आते रहते हैं वहाँ के घरों को इस तरह बनाया जाता है कि भूकम्प से कम से कम नुकसान हो। वहाँ के लोगों को इस बात की पूरी ट्रेनिंग दी जाती है कि भूकम्प आने पर क्या करें। इससे जान-माल दोनों का नुकसान कम से कम हो जाता है।

प्रशांत महासागर के आसपास सुनामी का कहर बहुत होता है। इसलिए इन क्षेत्रों में सुनामी की चेतावनी देने की पूरी व्यवस्था है। इस महासागर में 6 सुनामी मीटर लगे हैं जो इसकी खबर रखते हैं। अमरीका में अलास्का और हवाई में दो चेतावनी केन्द्र हैं जो सुनामी की चेतावनी को झट से कई-कई देशों तक पहुँचा देते हैं।

इन इलाकों में सुनामी इतना जाना-पहचाना नाम है कि यहाँ की स्कूली और कहानियों की किताबों में भी इनका ज़िक्र आम है। यहाँ दी गई कहानी भी कुछ ऐसा ही कहती है। इससे माल का नुकसान भले ही न बचा पाएँ पर लाखों जानें बचाई जा सकती हैं। समुद्र तट से दूर पहाड़ी जैसी किसी ऊँची जगह पर जल्द से जल्द पहुँच जाना बचाव का एक बिलकुल आसान तरीका है। वैसे भी दूरस्थ सुनामी अपने पहुँचने से पहले लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचने का पर्याप्त समय देती है। इसलिए समय रहते मिल गई चेतावनी से समुद्र किनारे रह रहे लोगों की जानें बचाई जा सकती हैं।

कुछ समय पहले एक बैठक में विशेषज्ञों ने बताया कि हिन्द महासागर क्षेत्र में भी सुनामी का खतरा है। यह भी कहा गया कि सुमात्रा में बड़े-बड़े भूकम्प आते रहे हैं। इसलिए यहाँ भी सुनामी चेतावनी तंत्र होना चाहिए। लेकिन इस बात पर लोगों के बीच सहमति नहीं बनी।

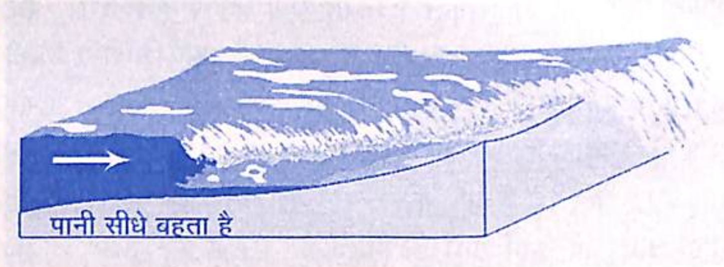
यह सही है कि इस बार जो भूकम्प आया उससे सुनामी आ सकती है, इस खतरे का आसपास के देशों को पता न था। लेकिन अमरीका के वैज्ञानिकों को लग गया था कि एक घातक सुनामी हिन्दमहासागर में आगे की ओर बढ़ रही है। वे कहते हैं कि उन्होंने इंडोनेशिया में ई-मेल से इसकी खबर भी भेजी। पर पता नहीं उसका क्या हुआ। कितनी अजीब बात है न कि आजकल तो ज़रा में एक बात दुनिया के किसी भी कोने में पहुँच जाती है। इन वैज्ञानिकों को इतनी महत्वपूर्ण बात सही जगह, सही समय बताने का कोई तरीका ही नहीं सूझा। इस भूल की कीमत लाखों लोगों ने अपनी जान देकर चुकाई। लाखों का काम-धंधा छिन गया। लाखों के घर-द्वार उजड़ गए।

सुनामी बनाम हवा वाली लहरें

सुनामी हवा से चलने वाली लहरों से काफी अलग होती हैं। हवा वाली लहरों में दो लहरों के बीच आम तौर पर 5 से 20 सेकण्ड का फासला होता है। दो लहरों के बीच 100 से 200 मीटर का फासला होता है। लेकिन सुनामी की दो लहरें 10 मिनट से 2 घंटे के अन्तर से आ सकती हैं। और दो लहरों के बीच 500 कि.मी. तक का फासला हो सकता है।

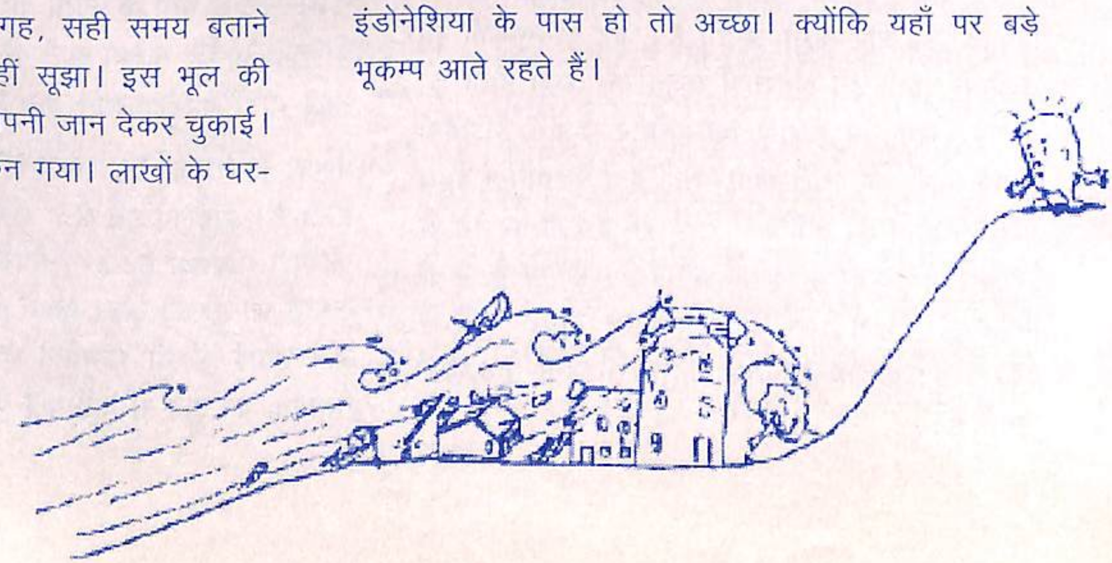


हवा वाली लहरें आती जाती हैं। ये ऊँचाई वाली जगहों तक नहीं पहुँच पाती हैं।

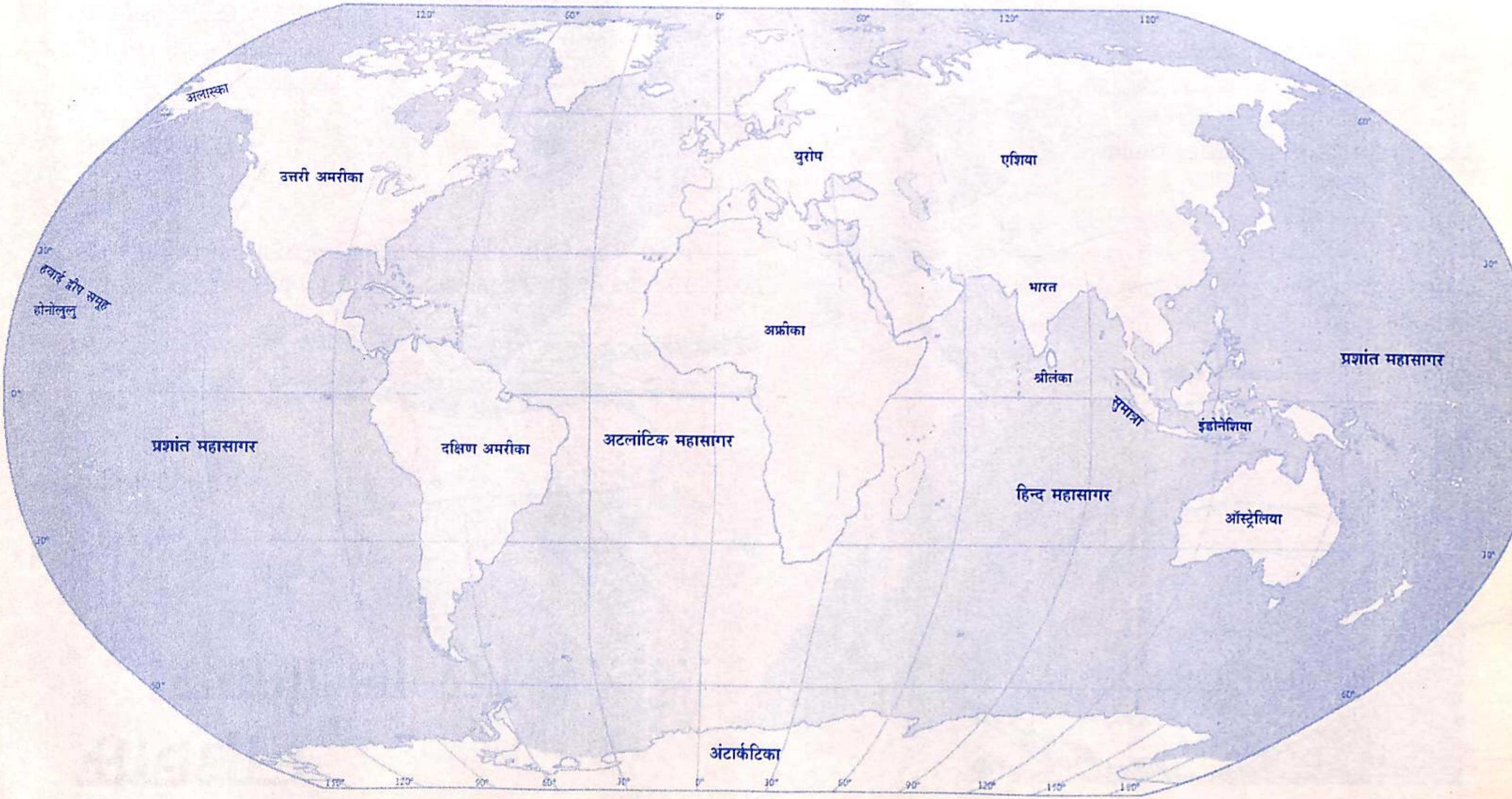


सुनामी पानी की एक दीवार की तरह ज़मीन पर अचानक बह आती है।

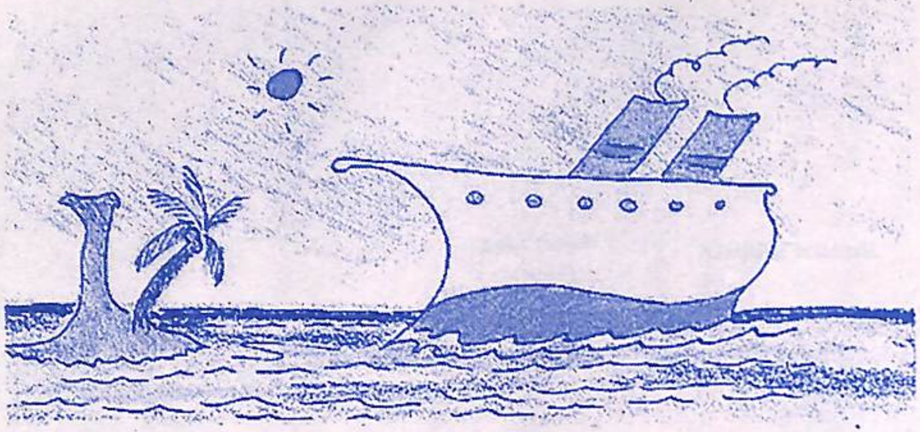
वैज्ञानिकों का कहना है कि हिन्द महासागर में कुछेक सुनामी यंत्र लग जाने से ही काम चल सकता है। ऐसा एक यंत्र इंडोनेशिया के पास हो तो अच्छा। क्योंकि यहाँ पर बड़े भूकम्प आते रहते हैं।



दुनिया का नक्शा


अलास्का
उत्तरी अमरीका
हवाई द्वीप समूह
होनोलुलु
प्रशांत महासागर
दक्षिण अमरीका
अटलांटिक महासागर
युरोप
अफ्रीका
एशिया
भारत
श्रीलंका
सुमात्रा
इंडोनेशिया
प्रशांत महासागर
हिन्द महासागर
ऑस्ट्रेलिया
अंटार्कटिका

सावधान
सुनामी आ रही है......

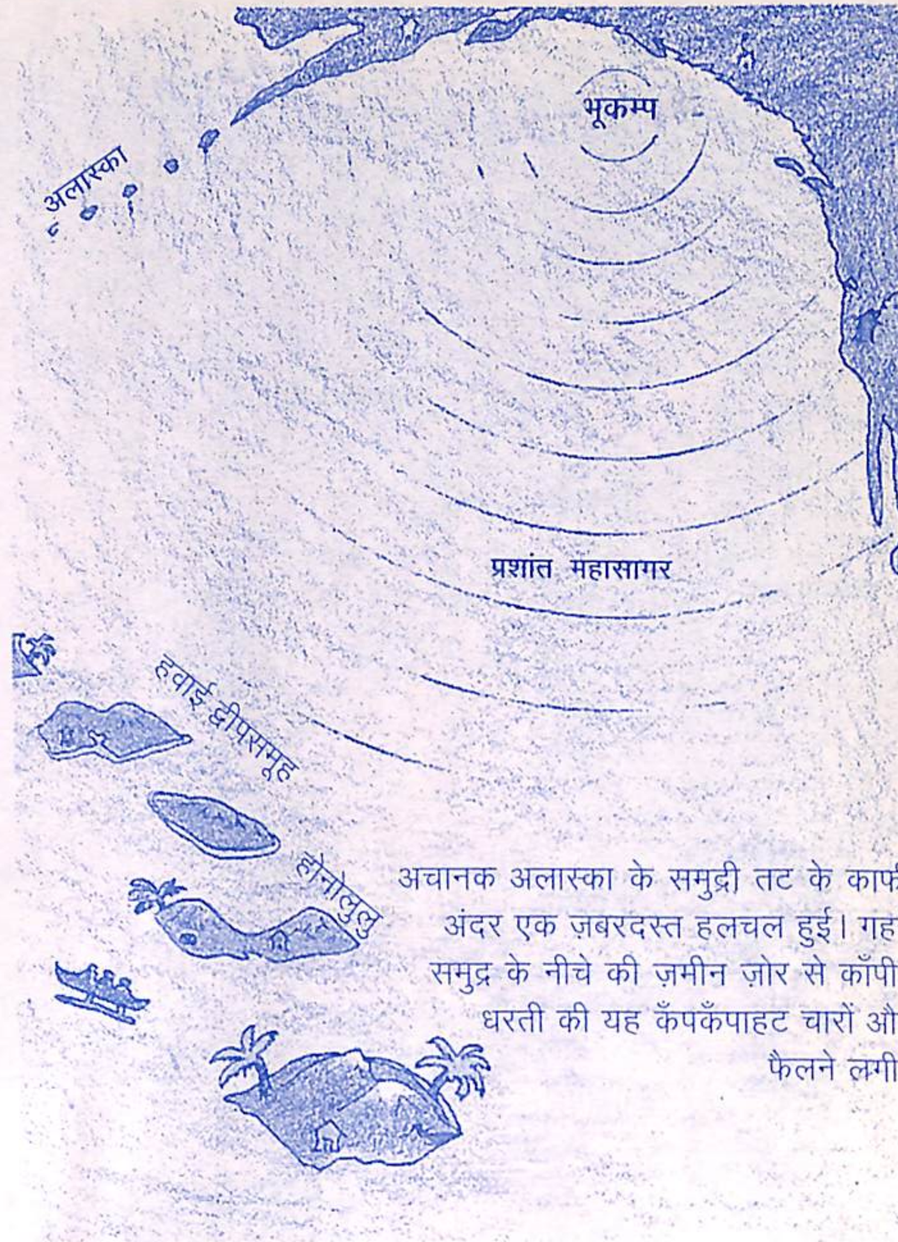


प्रशांत महासागर का शांत नीला जल। एक जहाज़ हवाई द्वीपों की ओर जा रहा है। इसी शांत महासागर के एक द्वीप होनोलुलु में सूरज चमक रहा है।

अलास्का में ...

हवाई से हज़ारों किलोमीटर दूर अलास्का में बर्फ गिर रही है। ठण्ड भी काफी है। सुबह के सात बजे हैं। कुछ लोग नाश्ता कर रहे हैं। कहीं ऑफिस तो कहीं स्कूल जाने की जल्दी है।

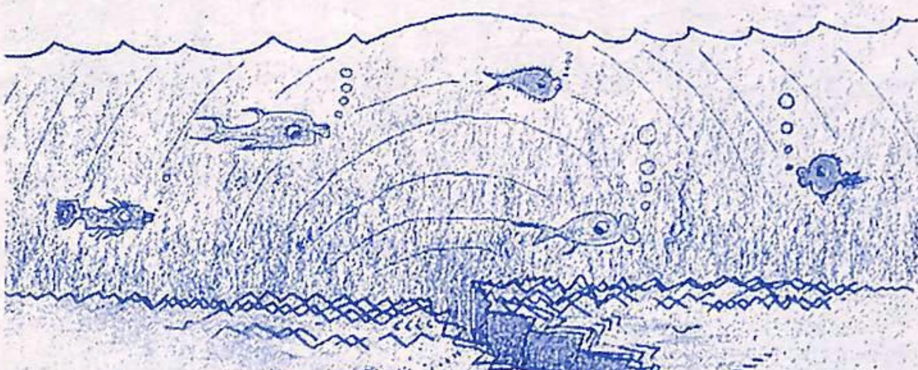




अचानक अलास्का के समुद्री तट के काफी अंदर एक ज़बरदस्त हलचल हुई। गहरे समुद्र के नीचे की ज़मीन ज़ोर से काँपी। धरती की यह कँपकँपाहट चारों और फैलने लगी।



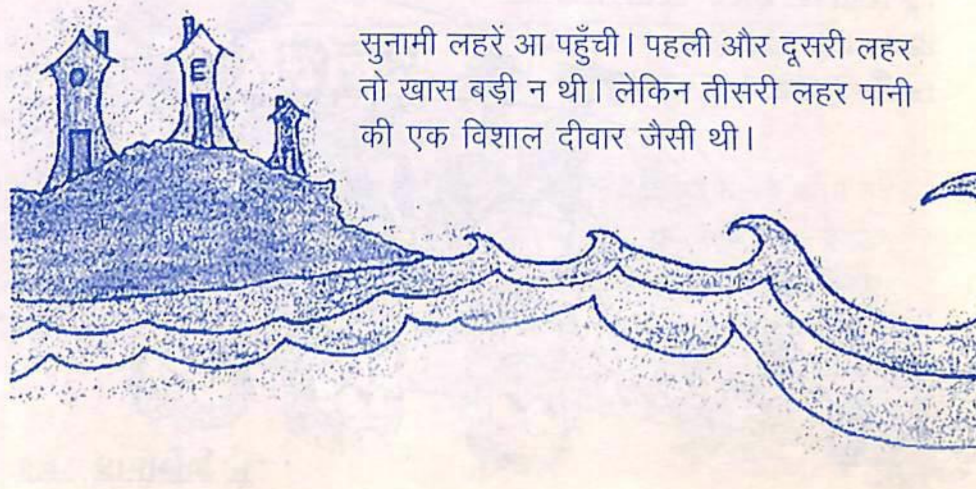
अलास्का के मकानों की दीवारें और ज़मीन काँपने लगी। कुर्सियाँ पलट गई, बरतन-भाण्डे गिर पड़े। लोग समझ गए - भूकम्प आया है। वे घर छोड़कर भागे नहीं। वे जानते थे क्या करना है। मजबूत मेज़, दरवाज़ों की चौखट जो हाथ लगा उसके नीचे जा खड़े हुए।



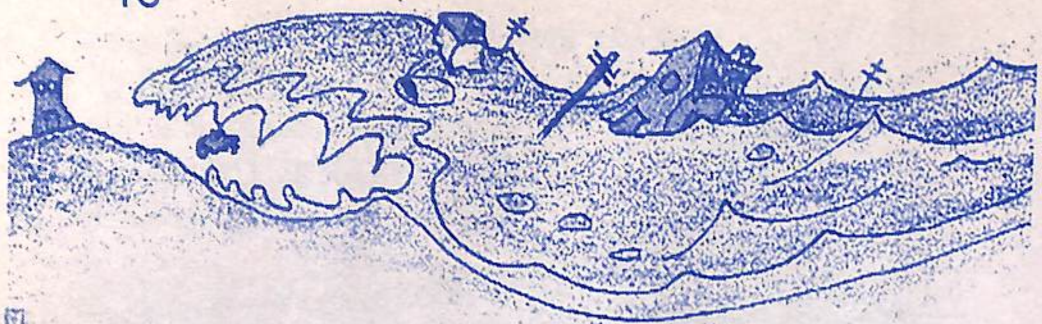
भूकम्प से समुद्र का पेंदा कहीं ऊँचा, कहीं नीचा हो गया। इससे इसके ऊपर वाले पानी में भी ज़बरदस्त उठा-पटक हुई। और पैदा हुईं बड़ी और बेहद खतरनाक लहरें - सुनामी लहरें। समुद्र में ये बहुत तेज़ी से चारों ओर आगे बढ़ने लगीं।



जब कँपकँपाहट बन्द हुई, तो लोग बेतरतीब बिखरी चीज़ों को समेटने नहीं लगे। उन्होंने फटाफट पानी, बिजली के मेन स्विच बन्द किए, गैस बन्द की, घर बन्द किया और समुद्र से दूर किसी ऊँची जगह की ओर दौड़ पड़े। सुनामी किसी भी वक्त आ सकती है। अलास्का के चेतावनी केन्द्र ने सब तरफ ऐलान कर दिया।



सुनामी लहरें आ पहुँची। पहली और दूसरी लहर तो खास बड़ी न थी। लेकिन तीसरी लहर पानी की एक विशाल दीवार जैसी थी।



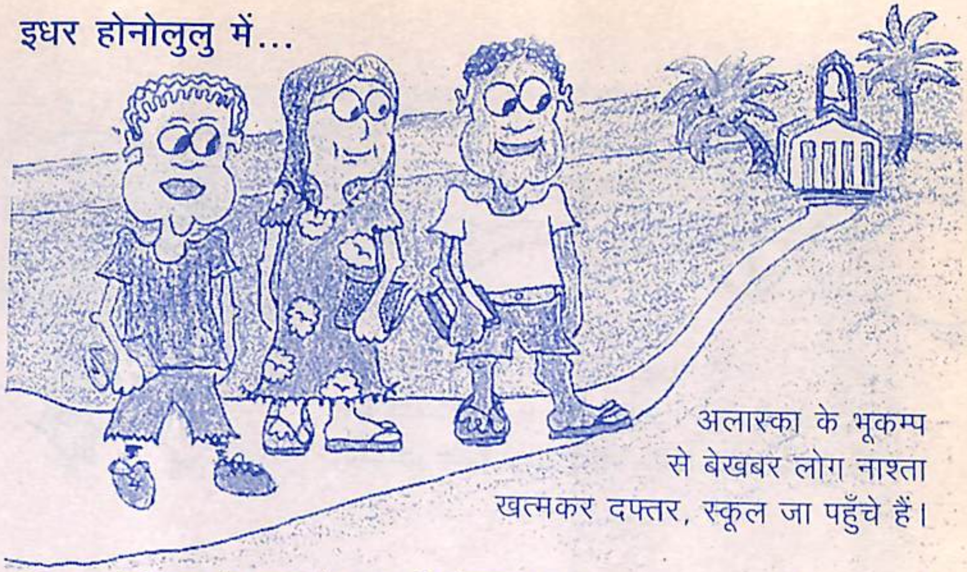
लहरें इतनी ताकतवर थीं कि घरों, ऊँची इमारतों को चपेट में ले लिया। बड़े पेड़, बिजली और टेलिफोन के खम्बे गिर पड़े। रेल पटरी तक मुड़ गई।



ट्रक, गाड़ियाँ पलट गईं। सुनामी का तांडव चलता रहा...

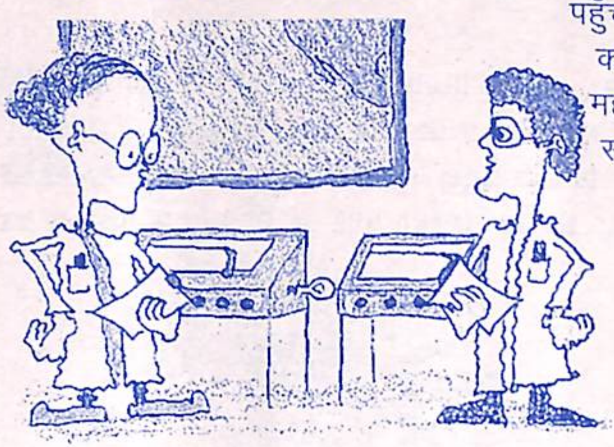
पास की जगह थी इसलिए सुनामी ने ज़्यादा समय न दिया। कई लोग भी मारे गए। समुद्र किनारे से एक-दो किलोमीटर दूर तक यह तबाही हुई। लहरे धीरे-धीरे शांत होती गईं। जब तक वे शांत न हुईं लोग सुरक्षित जगहों पर ही रहे।

इधर होनोलुलु में...



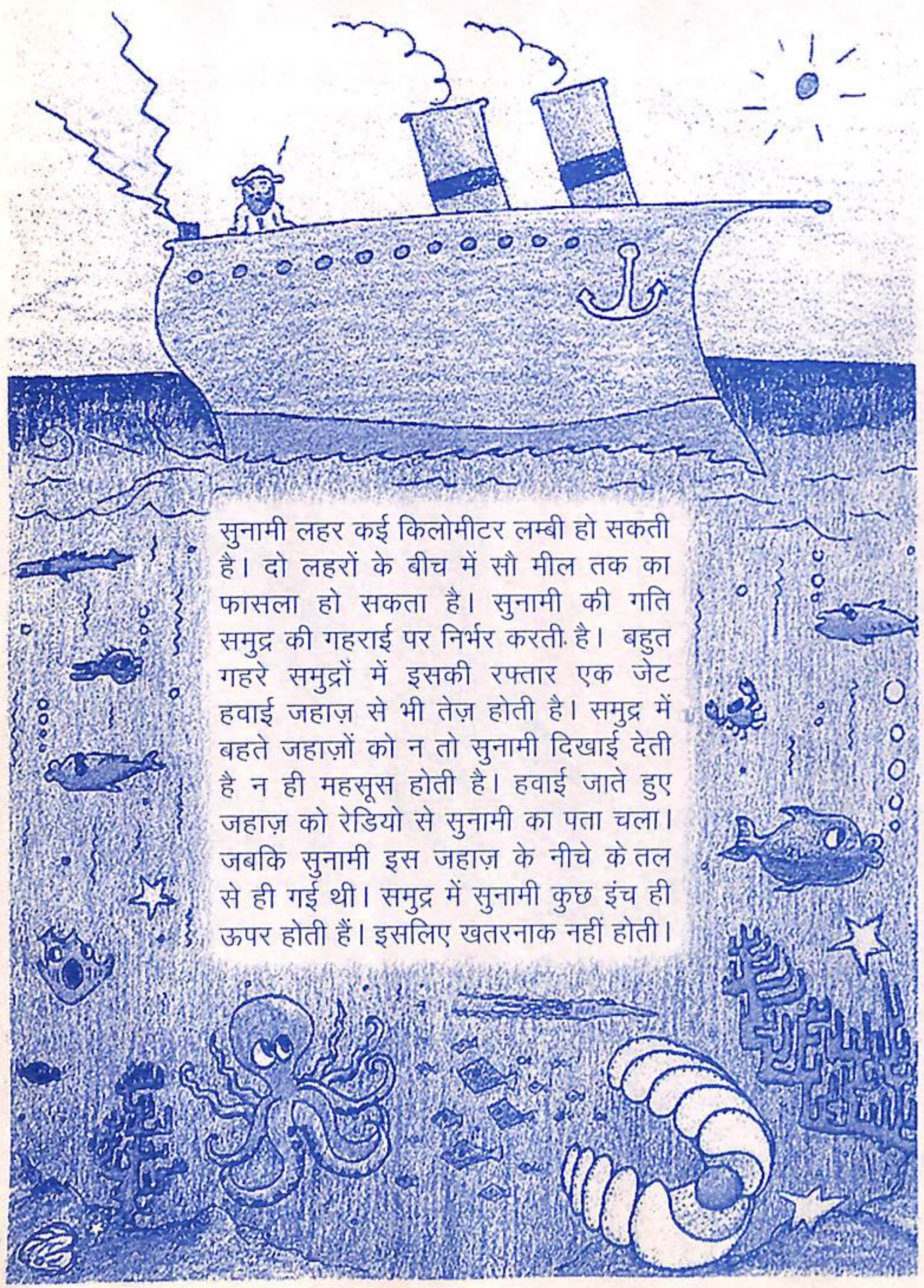
अलास्का के भूकम्प से बेखबर लोग नाश्ता खत्मकर दफ्तर, स्कूल जा पहुँचे हैं।

लेकिन होनोलुलु के पास के सुनामी चेतावनी केन्द्र तक भूकम्प की जानकारी पहुँच चुकी है। यहाँ दिन-रात काम होता रहता है। प्रशांत महासागर क्षेत्र में आने वाले सभी छोटे-बड़े भूकम्पों को यहाँ नापा जाता है।

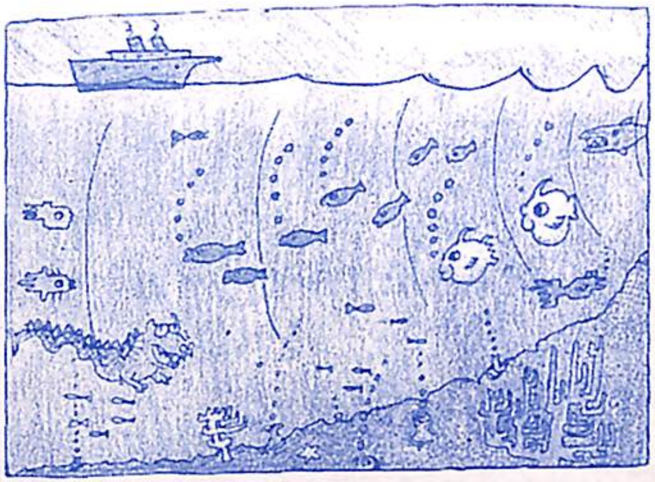




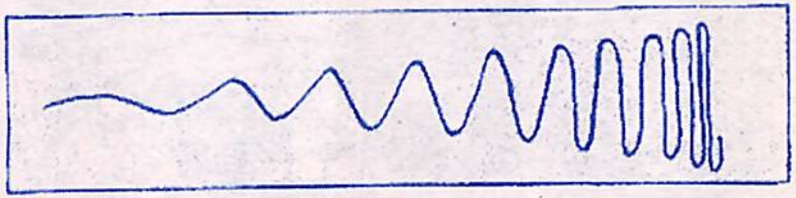
बिना देर किए प्रशांत क्षेत्र के आसपास के सभी देशों के चेतावनी केन्द्रों तक यह खबर पहुँचा दी गई कि अलास्का में आया भूकम्प इतना बड़ा था कि सुनामी पैदा हो गई। अब वह हर दिशा में बढ़ रही है।



सुनामी लहर कई किलोमीटर लम्बी हो सकती है। दो लहरों के बीच में सौ मील तक का फासला हो सकता है। सुनामी की गति समुद्र की गहराई पर निर्भर करती है। बहुत गहरे समुद्रों में इसकी रफ्तार एक जेट हवाई जहाज़ से भी तेज़ होती है। समुद्र में बहते जहाज़ों को न तो सुनामी दिखाई देती है न ही महसूस होती है। हवाई जाते हुए जहाज़ को रेडियो से सुनामी का पता चला। जबकि सुनामी इस जहाज़ के नीचे के तल से ही गई थी। समुद्र में सुनामी कुछ इंच ही ऊपर होती हैं। इसलिए खतरनाक नहीं होती।



किनारों पर जहाँ समुद्र की गहराई कम हो जाती है वहाँ इसकी रफ्तार तो कम हो जाती है लेकिन ये बेहद ऊँची हो जाती हैं। असल में कम गहराई में पहली लहर की तो गति धीमी हो जाती है लेकिन उसके बाद वाली लहर जो उससे 100 मील दूर थी अब इतनी दूर नहीं रह पाती है।



लहरों की दूरियाँ कम हो जाने से वे इकट्ठी हो जाती हैं। इससे वे बेहद ऊँची और खतरनाक हो जाती हैं।

सुनामी चेतावनी केन्द्र के वैज्ञानिक यह तो बता पाते हैं कि भूकम्प से बहुत दूर वाली किसी जगह पर सुनामी कब पहुँचेगी। जैसे सुबह 7 बजे अलास्का में आए भूकम्प से पैदा हुई सुनामी पाँच घंटे बाद 12 बजे तक हवाई में पहुँचेगी। पर वह कितनी बड़ी होगी, इससे कितना नुकसान होगा यह पता पाना सम्भव नहीं है।

इसीलिए जो लहर समुद्र में केवल 10 से 12 इंच ऊपर होती हैं,





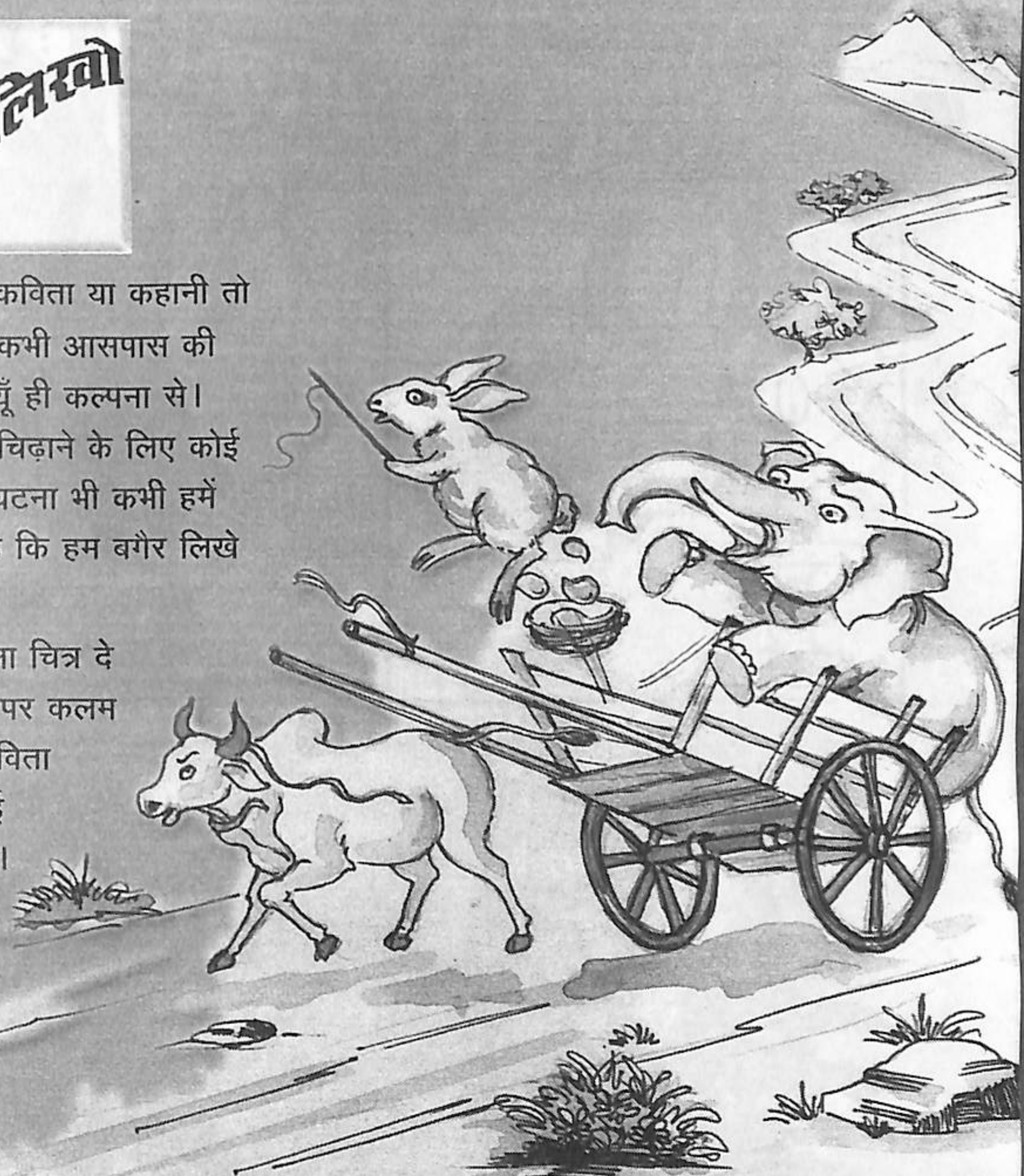
11.40 बजे एक अजीब सी बात हुई। कुछ जगहों पर समुद्र का जल स्तर बढ़ने लगा। और कुछ में समुद्र पीछे की ओर हटने लगा। मछलियाँ रेत पर तड़पने लगीं। लगभग 20 मिनट बाद 12 बजे पहली लहर आई। फिर एक-एक घंटे में छह लहरें आईं। तटों पर ऱखी नावें उलट गईं, घरों, पेड़ों गाड़ियों ने लहरों के ज़बरदस्त थपेड़ों को झेला।



कहानी लिखो

कभी न कभी कोई कविता या कहानी तो तुमने भी लिखी होगी। कभी आसपास की किसी चीज़ पर, कभी यूँ ही कल्पना से। शायद कभी किसी को चिढ़ाने के लिए कोई तुकबंदी की हो। कोई घटना भी कभी हमें इतना प्रभावित करती है कि हम बगैर लिखे रह ही नहीं पाते। खैर!

यहाँ हम एक चुलबुला चित्र दे रहे हैं। तुम्हें इसी चित्र पर कलम चलाना है। चाहो तो कविता लिखना और अगर कोई कहानी सूझे तो कहानी। चुनिंदा रचनाएँ हम अगले किसी अंक में प्रकाशित करेंगे।



फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन	:	भोपाल
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	विनोद रायना
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
मुद्रक का नाम	:	विनोद रायना
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य ई-7एच.आई.जी. 453,, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016

सम्पादक का नाम	:	विनोद रायना
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	:	रेक्स डी. रोज़ारियो भारतीय एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016

मैं विनोद रायना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

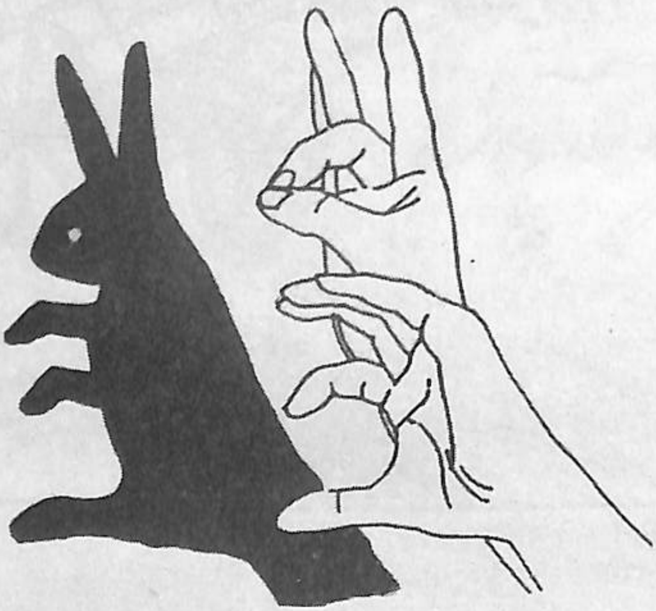
विनोद रायना

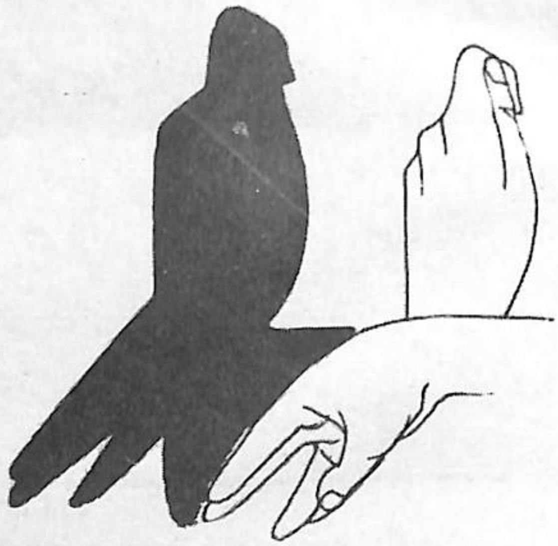
1 जनवरी, 2005 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

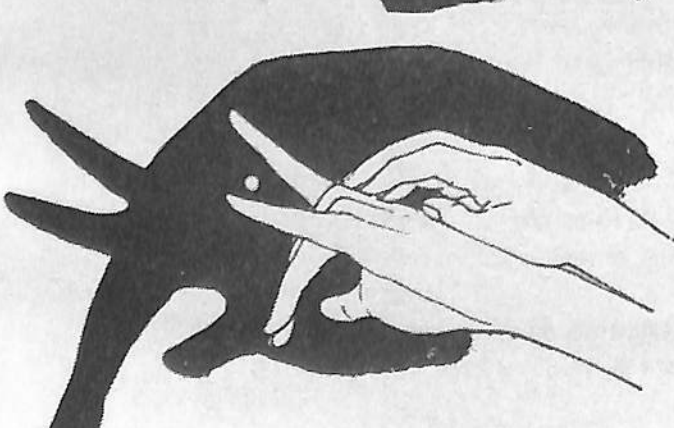
परछाई से आकृति बनाओ

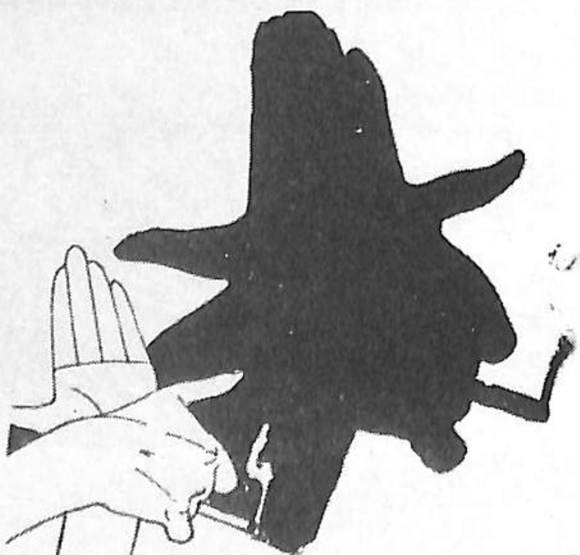


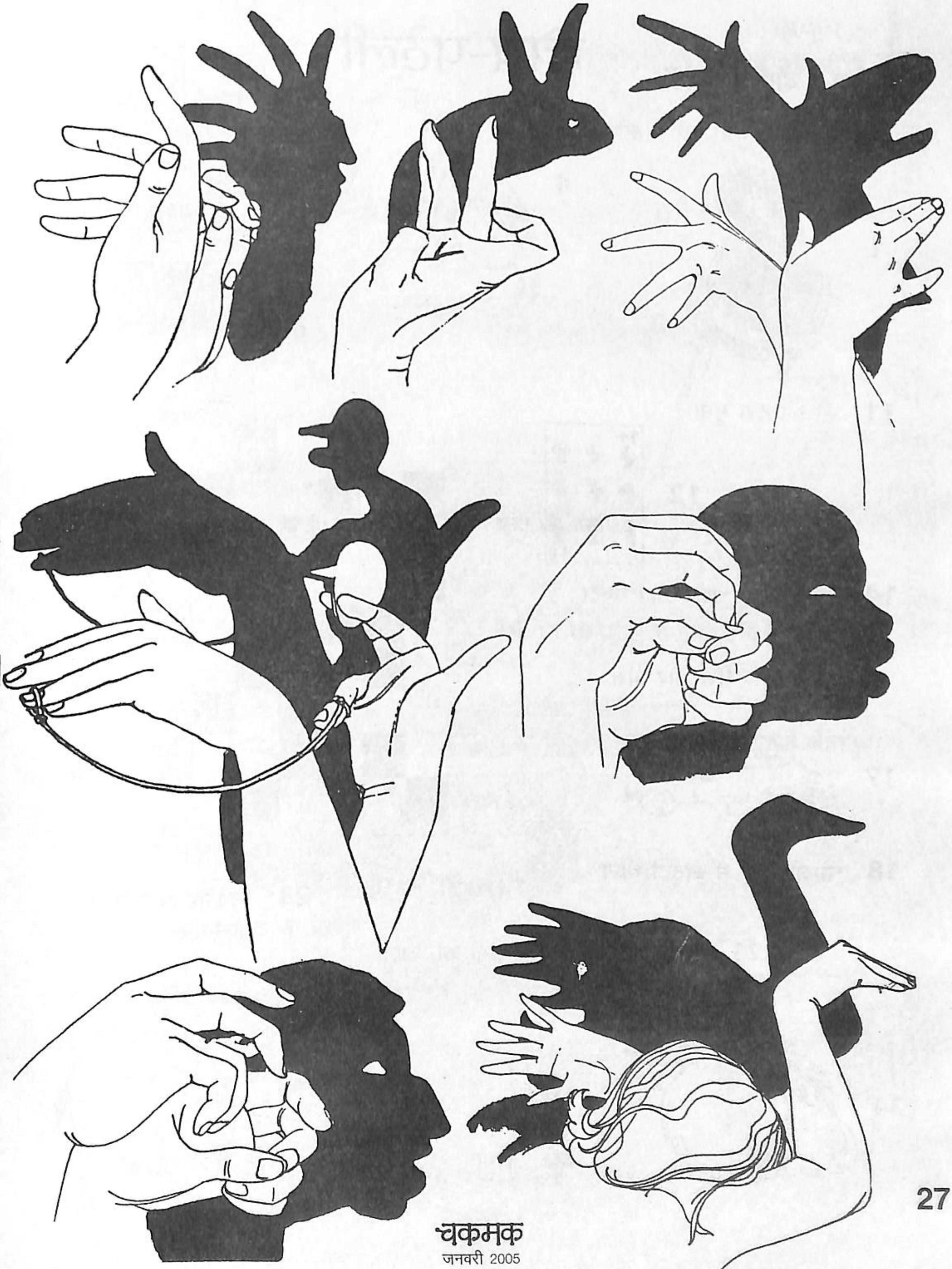








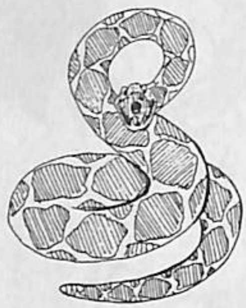




चित्र-पहेली

संकेत - दाएँ से बाएँ

1



4



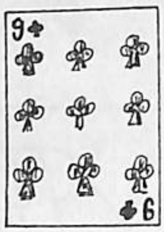
6 57-37 =



9

11 सौ का दस गुना

12



1	2		3	■	4	5		■
■		■	6	7	■		■	8
9		10	■		■	11		
■	12		13	■	14		■	
15	■	■	16			■	■	
	■	17		■	18	19	20	■
21			■	22	■	23		
	■		■	24	25	■		■
■	26			■	27			

14 'राख' में है 'खोटे' का उल्टा

16 बीस और बीस

17

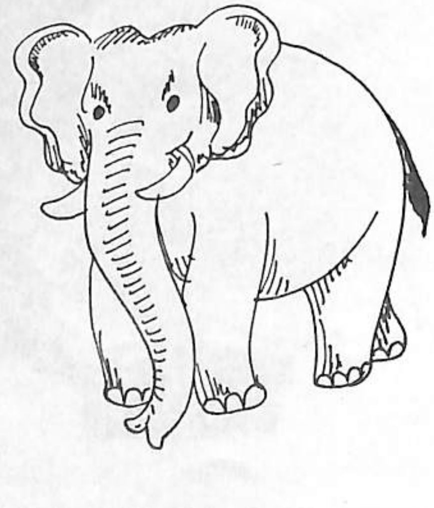


18 'ताजी राय' में खट्टी चीज़

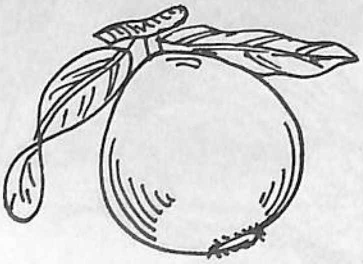
23 'मकान' में है कुछ गोल-गोल

21 'हार लिया' में है अभी-अभी का, ताज़ा

27



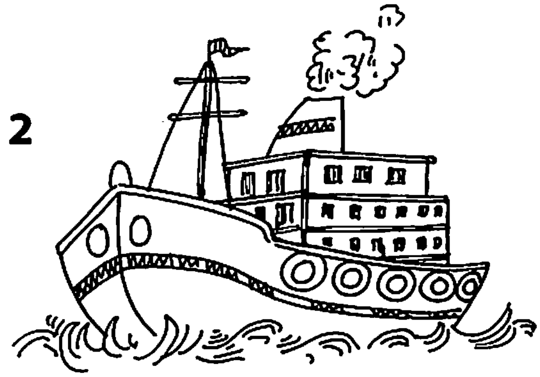
24



26 चश्मा

संकेत - ऊपर से नीचे

2



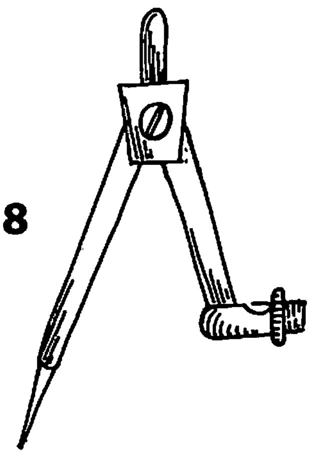
3 'कबीर' में है फसलों का नाम

5



7 दण्ड (उर्दू)

8

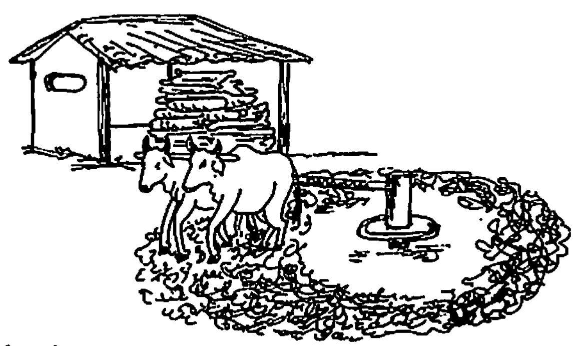


10 'राह' में एक मात्रा की कमी

13 'चार लाख' में बेसहारा

14 'मसखरा' में है एक बीमारी

15



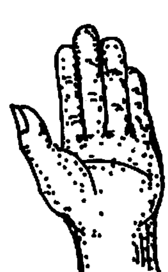
17 पिछले अंक की एक कहानी का पात्र

19 'समय' में है मौत का देवता

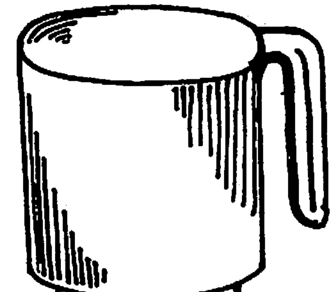
20



22



25



गली-गली के खेल

इस कॉलम में हम तुम्हें कुछ मज़ेदार खेलों के बारे में बताएँगे। इन्हें खेलने के लिए न तो तुम्हें बड़े मैदान की ज़रूरत है और न किसी भारीभरकम सामान की। बस जब भी मन करे दोस्तों-यारों को पकड़ो और खेल शुरू! ऐसे कई खेलों को तुम जानते ही होगे, कुछ से शायद पहली बार मिलो। इस बार हम दो सामूहिक खेलों के बारे में बता रहे हैं।

बोलो भाई कितने



'बोलो भाई कितने' में एक रेफरी की जरूरत पड़ती है। रेफरी कौन होगा, यह फैसला करने के तुम्हें कितने ही तरीके आते होंगे। सबसे पहले खेलने वाले एक गोला बनाकर खड़े हो जाते हैं। रेफरी इस गोले के बीच में रहता है। वह गाते हुए पूछेगा '... बोले भाई कितने!' बाकी सब गाते हुए ही जवाब देंगे ... 'आप बोलो जितने!' फिर रेफरी कोई एक अंक बता देगा। मानलो बताया.... तीन! उसके 'तीन' बोलते ही हर खिलाड़ी की कोशिश होगी कि वह जल्द से जल्द तीन का समूह बना ले। जितने खिलाड़ी तीन के समूह में खड़े हो जाएँगे, वे आगे खेलते रहेंगे। बाकी आऊट!

आऊट खिलाड़ी रेफरी के साथ गोले में खड़े होकर दोहराएँगे– 'बोलो भाई कितने!'



दो-चार बार खेलोगे तो तुम भी इस खेल के उस्ताद हो जाओगे। हाँ, इस खेल में खिलाड़ी जितने अधिक होंगे, मज़ा भी उतना ही आएगा। इस खेल को नए नियमों के साथ खेल सकते हो। जैसे हमारा एक दोस्त इस खेल को यूँ खेलता है ...' बोलो भाई कैसे' – 'आप कहो जैसे!' और फिर रेफरी जैसा रहने को कहता है बाकी लोग वैसी मुद्रा में हो जाते हैं। जैसे उसने कहा – 'दायाँ हाथ सिर पर, बायाँ हाथ कान पर!' सबसे आखिर में मुद्रा बनाने वाला आऊट हो जाता है।

रूमाल झपट्टा



रूमाल झपट्टा भी कम मज़ेदार खेल नहीं है। इसमें खिलाड़ी दो पालों में बँट जाते हैं। बड़े से गोले के दोनों तरफ दो रेखाएँ खिंची होती हैं। जिन पर टीमें खड़ी होती हैं। गोले के एक तरफ एक टीम और दूसरी तरफ दूसरी टीम। गोले के बीच में एक रूमाल रखा होता है। हर खिलाड़ी को उसके क्रम से नम्बर मिलता है। मानलो पाँच-पाँच खिलाड़ी खेल रहे हैं तो दोनों टीमों के खिलाड़ियों को एक से पाँच तक नम्बर मिलेंगे।

कौन-सी टीम खेल शुरू करेगी, इसके लिए टॉस भी कर सकते हो। जो टीम टॉस जीतेगी उसका कोई एक खिलाड़ी या उस टीम का लीडर कोई एक नम्बर बोलेगा। दोनों टीमों के उस नम्बर के खिलाड़ी गोले की तरफ दौड़ेंगे। उनका मकसद गोले में पड़े रुमाल को उठाकर विरोधी खिलाड़ी से बचकर अपनी जगह पर आना है। हाँ, लेकिन उठाने से पहले दो चीज़ों का ध्यान रखना पड़ता है। एक तो उस गोले का एक चक्कर लगाने से पहले रुमाल नहीं उठा सकते। दूसरे, दूसरी टीम के खिलाड़ी से बचकर लाइन में पहुँचना होता है। अगर अपनी जगह पर पहुँचने से पहले ही दूसरी टीम का खिलाड़ी उसे छू लेता है तो रुमाल लेकर भाग रहा खिलाड़ी आऊट हो जाता है। जिस टीम के सभी खिलाड़ी पहले आऊट हो जाते हैं, वह हार जाती है।



⊙ चित्र : अशोक चंचल



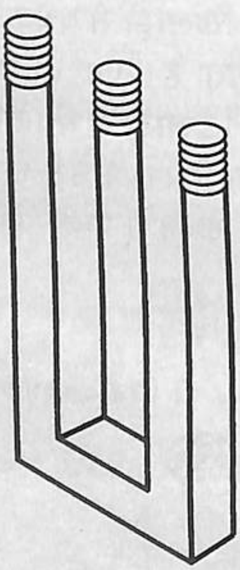
माथा पच्ची

1

आस्तीन, खरचा, छरहरा, बिसात, साबुत, नौकर... ऐसे कितने ही शब्द होंगे। क्या खासियत है इनमें?

हाँ! इनमें एक न एक अंक छुपा है। जैसे खरचा में चार। क्या तुम ऐसे पाँच शब्द सिर्फ पाँच मिनिट में ढूँढ सकते हो?

2

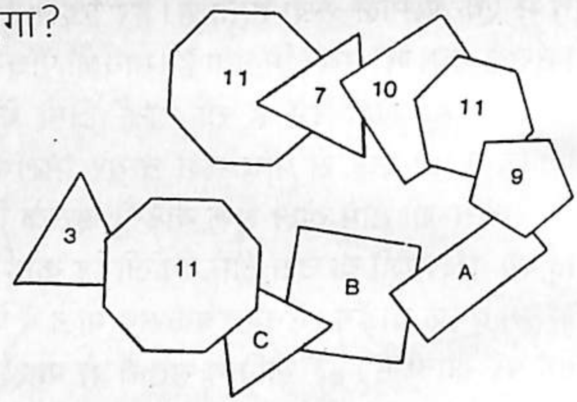


इसके आधार पर देखोगे तो कुछ और दिखेगी और ज़रा ऊपर देखोगे तो कुछ और!

है न कमाल की आकृति!

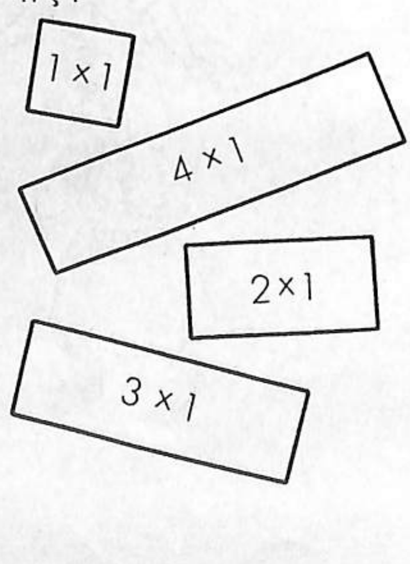
3

नीचे अलग-अलग कुछ बॉक्स बने हैं। उनमें अलग-अलग संख्या लिखी है। परन्तु तीन बॉक्सों में **A, B, C** लिखा है। क्या तुम बता सकते हो कि इन तीनों बॉक्सों में क्या आएगा?



4

इन चार टुकड़ों पर उनके आकार की नाप लिखी है। कोई 1 से.मी. का है तो कोई 3 से.मी. का तो कोई 4! खैर... तुम्हें इन्हें इस तरह जमाना है कि इनसे एक वर्ग बन जाए।

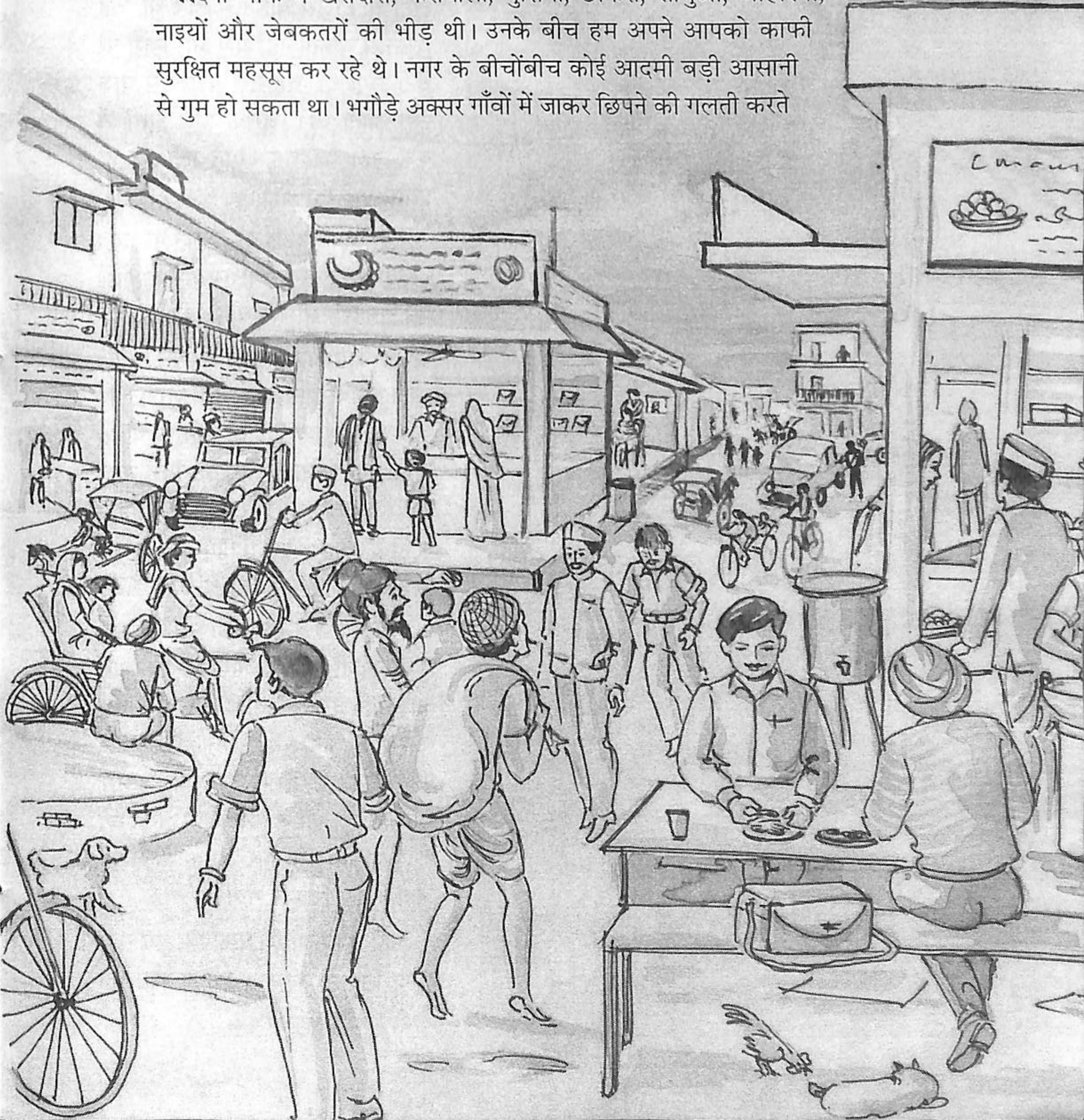


चाँदनी चौक में पड़ाव

- रस्किन बांड

मशहूर लेखक रस्किन बांड देहरादून से गुजरात की यात्रा पर निकले। बीच में पड़ी दिल्ली....

चाँदनी चौक में खरीदारों, फेरीवालों, मुंशियों, छोकरों, साधुओं, जौहरियों, नाइयों और जेबकतरों की भीड़ थी। उनके बीच हम अपने आपको काफी सुरक्षित महसूस कर रहे थे। नगर के बीचोंबीच कोई आदमी बड़ी आसानी से गुम हो सकता था। भगौड़े अक्सर गाँवों में जाकर छिपने की गलती करते





हैं, जहाँ अजनबी होने के कारण जल्दी ही नज़र में आ जाते हैं। यह मात्र संयोग ही था कि हम दिल्ली में सबसे सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए थे।

यहाँ ताँगों, बैलगाड़ियों, साइकिलों, रिक्शों और नई व पुरानी कारों में एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ लगी थी। जिस वाहन में हॉर्न था, वह बजने से चूकता नहीं था। और जिस पर घंटी लगी थी, वह उसे बजाने से बाज़ नहीं आता था। जिसके पास इनमें से कुछ नहीं था, वह अपने गले का ही प्रयोग कर रहा था।

हम एक मिठाई की दुकान पर गए। दलजीत ने छककर गुलाबजामुन खाए। मैंने सुनहरी-सी जलेबी खाई।

तभी एकाएक पानी बरसने लगा। हमने दौड़कर एक बरामदे में शरण ली। जब बारिश तेज़ हुई, तो लोग भागते दिखाई पड़े। देखते ही देखते सारी भीड़ छँट गई। एक-दो कारें तेज़ बहते पानी से निकल गईं। आवारा गाएँ कूड़े-कचरे के ढेरों में मुँह मार रही थीं।

फिर कुछ कमउम्र छोकरों का एक झुण्ड कूदता-फाँदता आया। सड़क बाढ़ आई नदी जैसी लगती थी। छोकरे जब बारिश के पानी से भरी नाली के पास पहुँचे, तो उसी में कूद पड़े और धमाचौकड़ी, हो-हल्ला करने लगे। गेंदे के फूलों का एक हार सड़क के बीचों बीच बहता निकल गया।

और फिर बारिश एकाएक थम गई। सूरज निकल आया। एक कागज़ की

नाव तैरती हुई मेरी टाँगों के बीच से निकल गई।

"अब कहाँ चलें?" दलजीत बोला, "स्टेशन तो सुरक्षित जगह नहीं है।"

'किसी दूसरे रास्ते से दिल्ली से निकलना होगा। अभी तो रात काटने के लिए कोई सस्ता-सा होटल ढूँढते हैं।"

"अरे, हाँ। मेरे पास अभी तीस से ज़्यादा रुपए हैं।" दलजीत बोला।

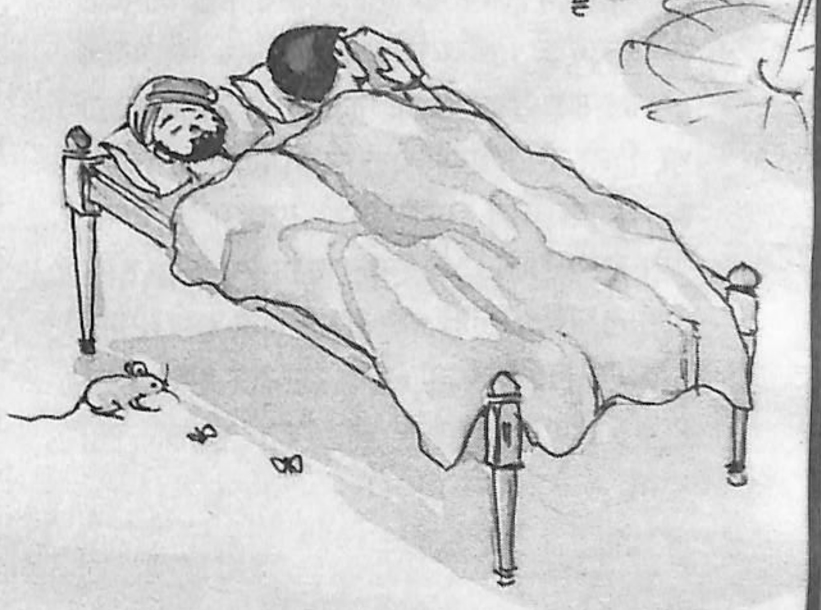
"मेरे दस रुपए मिलाकर भी तो दोनों के लिए काफी नहीं होंगे। और यदि टिकट खरीदने पड़े, तब तो बिल्कुल ही नहीं होंगे।"

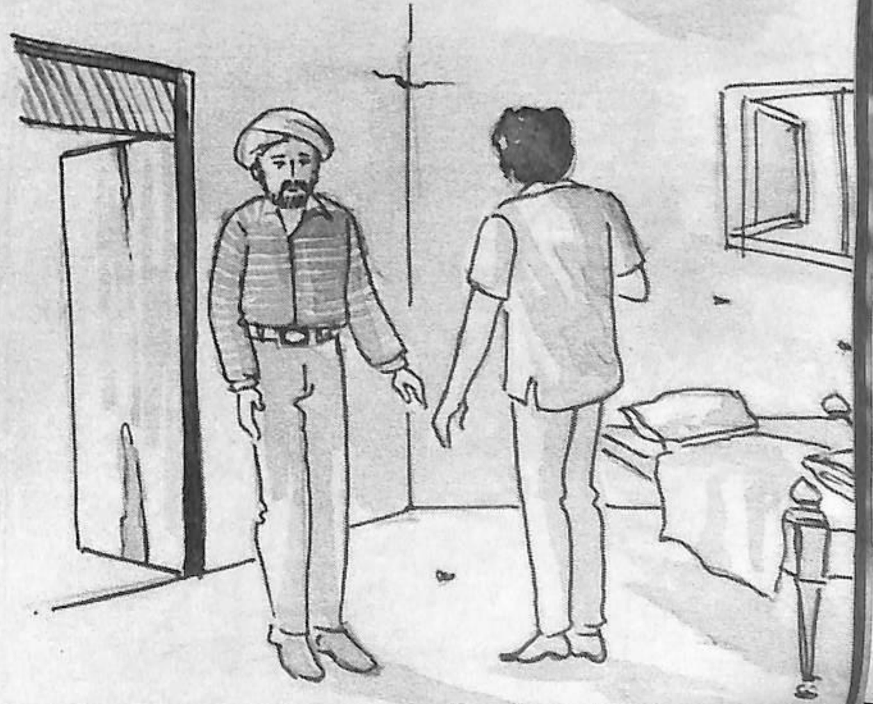
"हम टिकट खरीदेंगे ही नहीं।" दलजीत बोला।

होटल ढूँढने में हमें ज़्यादा समय नहीं लगा। होटल का नाम था 'ग्रेट ओरिएंटल होटल।' यह ऐन पुलिस स्टेशन के पीछे था। उसकी हालत ऐसी थी कि उसे तीसरे दर्जे का होटल मानने में भी संकोच हो। पाँच रुपए में हमें पिछवाड़े वाला एक कमरा मिल गया। उसकी खिड़की मिर्च-मसालों के किसी अफगानी व्यापारी के गोदाम में खुलती थी। नीचे के दालान से हींग की ज़बरदस्त गंध आ रही थी।

हम थककर चूर हो चुके थे। ऊपर से बला की गर्मी। सो सामान फर्श पर डाला और बारी-बारी से गुसलखाने की टोंटी के नीचे बैठ खूब नहाए। खाट एक ही थी। उसी पर हम पसर गए और दोपहर बाद तक क्या घोड़े बेचकर सोए कि न हमें बाज़ार के हल्ले-गुल्ले ने







परेशान किया, न होटल के गद्दे के खटमलों और मच्छरों का काटना महसूस हुआ। और न ही छत के पंखे की क्रीं-क्रीं ने हमारी नींद में खलल डाला।

जब नींद खुली, तो शाम हो चुकी थी। हमें फिर भूख लग आई थी। दलजीत ने दरवाज़ा खोला और चिल्लाकर आवाज़ लगाई। एक नौकर दौड़ा आया।

"हमारे लिए चाय, टोस्ट, दो बड़े-बड़े ऑमलेट और चटनी की बोतल लेकर आ, जल्दी।" दलजीत ने ऑर्डर दिया।

बीस मिनट बाद जो ऑमलेट आए, वे बहुत छोटे-छोटे थे। साफ था, एक ही अंडे के दो ऑमलेट बनाए गए थे। सॉस में पानी डालकर उसे पतला कर लिया गया था। टोस्ट जले हुए थे। नमक गीला था, जिसे नमकदानी खोलकर ही निकालना पड़ा। हाँ, काली मिर्च वाली शीशी एकदम उलट गई और हमारे भोजन का एक बड़ा हिस्सा बनी। चूँकि अभी हमारा पेट नहीं भरा था, इसलिए हमने दोबारा अंडों का ऑर्डर दिया। मगर इस बार हमने उबले अंडे मंगवाए। सोचा कि चाहे कितने ही छोटे क्यों न हों, होंगे तो पूरे ही न।

"चल, बाहर चलते हैं।" दलजीत बोला। 'यहाँ बड़ी घुटन है।"

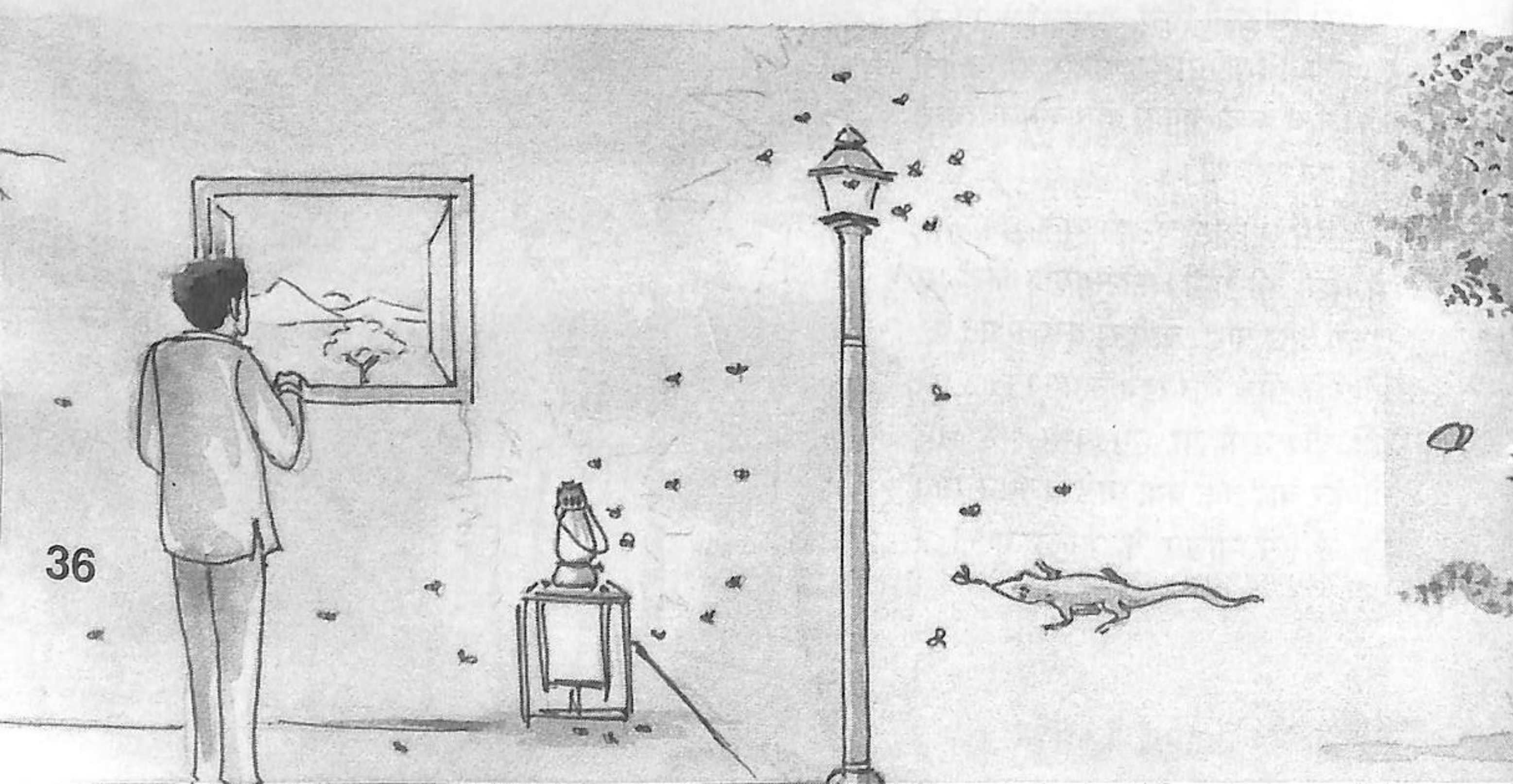
"मुझे नींद आ रही है।" मैंने कहा।

"तो मैं थोड़ी देर के लिए बाहर चक्कर लगा आता हूँ। गुरुद्वारे भी जाऊँ शायद।"

"ठीक है, मगर कहीं खो मत जाना।"

दलजीत बाहर निकल गया और मैंने खाट पर बैठकर रवींद्रनाथ ठाकुर की किताब 'द गार्डनर' खोल ली। मगर ज़्यादा देर पढ़ नहीं पाया, क्योंकि ज्यों-ज्यों साँझ ढलती जा रही थी, छोटे-छोटे कीट-पतंगे, हर गर्मियों की तरह, रात की ठण्डक का लाभ उठाने के लिए बाहर निकलकर मँडराने लगे थे।

फिर गर्मी के कारण दुबके पड़े दीमक चींटी आदि कीड़े-मकोड़े भी ज़मीन और दीवारों की पर्तों व दरारों से निकल-निकलकर बाहर आने लगे थे। जहाँ भी छेद या दरार थी, बड़े-बड़े पंखवाले पतंगे, अपने जीवन की पहली और अंतिम उड़ान भरने के लिए निकले चले आ रहे थे। पहले वे अपने पर फड़फड़ाते हुए इधर-उधर मँडराते रहते, फिर रोशनी की ओर यानी कि शहर-भर के बिजली



के बल्बों, सड़क वाले बिजली के खंभों और मिट्टी के तेल से जलनेवाले चिरागों-लालटेनों की ओर कूच कर जाते। हमारे कमरे के पास वाला बिजली का खंभा पतंगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। वहाँ आ जुटे पतंगों के झुण्ड को देखकर ऐसा लग रहा था, मानो कोई विशाल काया धीरे-धीरे हिल-डुल रही हो!

यह वक्त छिपकलियों के लिए भी काफी बढ़िया था। ऐसा लग रहा था, मानो हफ्तों तक शांति से इंतज़ार करने के बाद, वे भी अपने तोहफे लेने निकल पड़ी हों। वे लिसलिसी गुलाबी जीभ लपलपाते हुए, फुर्ती से कीड़े-मकोड़ों को चट करती जा रही थीं। यह सोचते हुए कि ऐसी दावत अगली गर्मियों से पहले दोबारा नहीं मिलने वाली, वे घंटों अपने पेट ठूँस-ठूँसकर भरती रहीं। पूरी गर्मियों भर ये कीट-पतंगे अंधेरे से रोशनी की ओर की अपनी इस उड़ान की कोशिश में रहते हैं और आज़ादी हासिल करने के इस प्रयास में उनमें से एक भी सही-सलामत नहीं बच पाता।

मुझे ऊँघ महसूस हुई और मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं। लेकिन शहर के यातायात का शोर खिड़की के रास्ते लगातार अंदर आ रहा था। जहाज़ और दूरदराज़ के बंदरगाह बहुत दूर प्रतीत हुए और उतनी ही दूर प्रतीत हुईं पहाड़ियाँ और उनसे निकलने वाले झरने!

"मैंने समस्या हल कर ली है," आते ही दलजीत प्रसन्नता से बोला! "हम ट्रेन-वेन का झंझट मोल नहीं लेंगे। मैंने एक ट्रक-ड्राइवर से दोस्ती गाँठ ली है। कहता है, हमें जयपुर तक ले जाएगा। करीब तीन सौ मील का सफर है। फिर ट्रेन पकड़ना काफी सुरक्षित होगा।"

"तेरा दोस्त कब ले जाएगा?"

"ट्रक सबेरे चार बजे जाएगा।"

"अभागों को आराम कहाँ।" मैंने झुँझलाकर कहा, 'फिर भी बेहतर है, जितनी जल्दी हो सके, यहाँ से निकल चलें। आज बुधवार है, और मेरे चाचा का जहाज़ शायद शनिवार को जाएगा। ट्रक ड्राइवर को कितने पैसे देने होंगे?"

'कुछ नहीं। फोकट में सवारी करेंगे। ड्राइवर भी सिक्ख है और मैंने उसे यह कहकर बहकाया है कि हम एक दूसरे के रिश्तेदार हैं – यानी मेरे जीजा की शादी उसकी साली की भतीजी से हुई है।"

सभी चित्र -विवेक वर्मा



ऐतिहासिक प्रयोग

पौधों का भोजन कहाँ से आता है? पौधों को खाते-पीते तो किसी ने देखा नहीं! तो बगैर खाए-पिए ये इतने बड़े-बड़े कैसे हो जाते हैं?

पहले लोग सोचते थे कि पौधों को भोजन मिट्टी से मिलता है। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तू का भी यही ख्याल था। पर उन्होंने प्रयोग करके इसे परखा नहीं था। 1450 के आसपास एक जर्मन कार्डिनल निकोलस ऑफ कूसा ने कहा कि पौधों का भोजन पानी से आता है। एक पौधे को गमले में बोया जाए और बड़ा होने के बाद मिट्टी को फिर से तोला जाए तो मिट्टी के वज़न में कोई अंतर नहीं आएगा। लेकिन उसने यह करके नहीं देखा। उस ज़माने में करके देखने की प्रथा ही नहीं थी।

आखिर 1640 में जैन बैप्टिस्टा फान हेलमॉन्ट ने कूसा के उस प्रयोग को करके देखा। और इसके आधार पर हेलमॉन्ट ने दो मतलब निकाले:

1. पौधे को भोजन मिट्टी से नहीं मिलता।
2. पौधे को भोजन पानी से मिलता है।

लेकिन

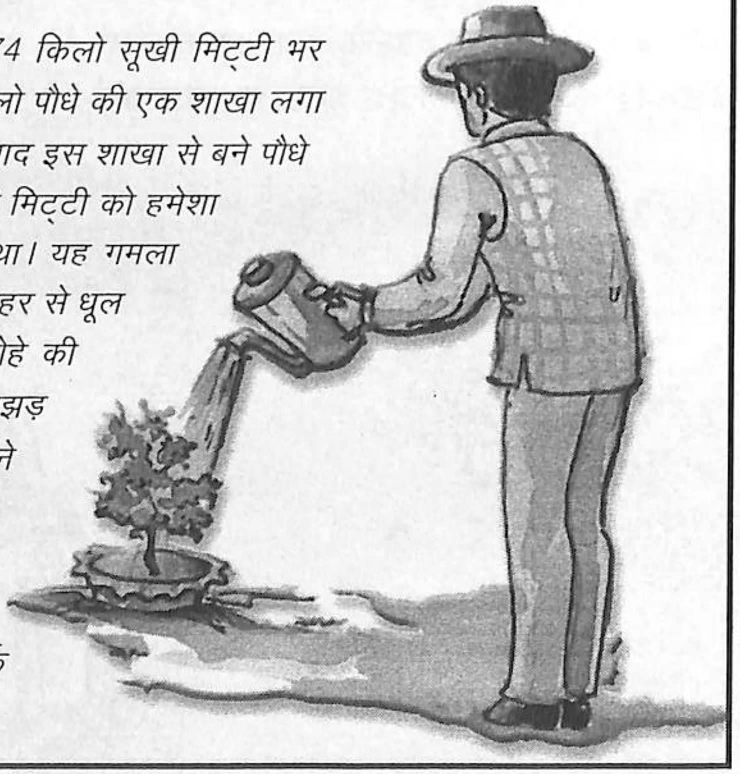
- क्या ये दोनों बातें सही हैं?
- क्या उसके प्रयोग से ये दोनों मतलब निकालना उचित है?

हेलमॉन्ट के इस प्रयोग का बड़ा महत्व था। ने प्रकृति के अध्ययन में प्रयोगों के महत्व और नाप-तौल के महत्व को बताया। इस प्रयोग से हेलमॉन्ट ने मान लिया था कि पौधे पानी नामक तत्व को अन्य तत्वों में बदल सकते हैं। हालांकि उनके ये मतलब आगे गलत साबित हुए।

यह बहस आज भी जारी है कि क्या तत्वों को एक-दूसरे में बदला जा सकता है। कुछ लोग मानते हैं कि यह संभव है। मगर आज उपलब्ध वैज्ञानिक समझ से हम जानते हैं कि यह सम्भव नहीं है।

फान हेलमॉन्ट ने क्या किया...

"मैंने एक गमला लिया, उसमें लगभग 74 किलो सूखी मिट्टी भर दी। इसे बारिश के पानी से भिगोकर, इसमें विलो पौधे की एक शाखा लगा दी। जिसका वज़न 1.9 किलो था। पाँच साल बाद इस शाखा से बने पौधे का वज़न लगभग 63 किलो था। मैंने गमले की मिट्टी को हमेशा बारिश के पानी या आसुत पानी से ही सींचा था। यह गमला काफी बड़ा था और ज़मीन में गड़ा हुआ था। बाहर से धूल न आए इसलिए मैंने गमले के किनारों को लोहे की चादर से ढँककर रखा था। इन पाँच सालों में पतझड़ के दौरान जो पत्तियाँ गिरीं, उनका हिसाब भी मैंने नहीं रखा। अंततः जब मैंने गमले की मिट्टी को सुखाकर तोला तो उसके वज़न (74 किलो) में मात्र 50 ग्राम की कमी आई थी। यानी पौधे के वज़न में जो लगभग 61किलो की वृद्धि हुई सिर्फ पानी के कारण हुई है।"



पाकिस्तानी बच्चे आए

पिछले दिनों हमारे शहर भोपाल, पड़ोसी देश पाकिस्तान से कुछ बच्चे आए। ये बच्चे पाकिस्तान के अलग-अलग शहरों से आए थे। भोपाल आने से पहले वे दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद कलकत्ता घूम आए थे। मेल-मुलाकातों से एक दूसरे को समझने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम बनाया गया था। यह कार्यक्रम 'प्लान इण्डिया' नामक संस्था की कोशिशों से हो पाया। यह संस्था बच्चों के लिए काम करती है।

भोपाल में इन बच्चों ने जमकर जश्न मनाया। धमाचौकड़ी की। भोपाल का चप्पा–चप्पा छाना। झीलें देखीं। मस्जि़दें देखीं। क्रिकेट खेली। और लोगों से छककर बातें कीं।

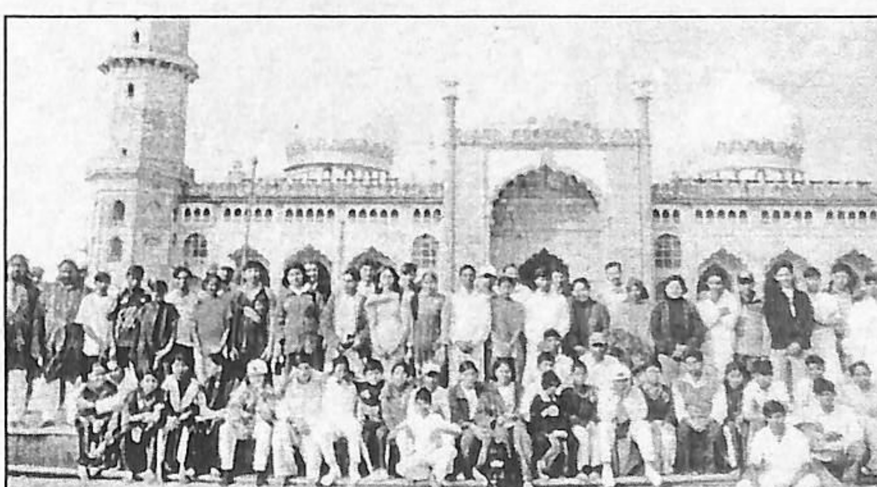
कई मेहमान बच्चे आखिर तक कोई ऐसी चीज़ ढूँढते रहे जो उनके यहाँ से अलग हो। उन्हें बस यही फर्क मिला कि उनके शहर को लोग किसी और नाम से बुलाते हैं। ताजुल मस्जि़द घूमते वक्त एक भोपाली बच्चे ने कहा .... ''अरे खाँ यहीं-कहीं से पकड़ लाए हैं इनको... और देखो तो के रिए हैं पाकिस्तानी बच्चे हैं।'' शायद उन्हें यकीन ही नहीं होता था कि पाकिस्तान में रहने वाले उनसे इतने मिलते-जुलते हैं।

मेहमान बच्चों ने एक दिन उन लोगों से मुलाकात की, जिन्हें बँटवारे के समय अपना शहर छोड़ना पड़ा था। और जो अब भोपाल में रहते हैं। मुलाकात का यह दौर घण्टों चला। एक बुजुर्ग ने अपने शहर के बारे में पूछा ... अनोखेलाल की मिठाई की दुकान थी तिराहे पर! तिराहे के ही पास जैन धर्मशाला भी हुआ करती थी ... वो तो अब होगी नहीं! उनके उसी पाकिस्तानी शहर के बच्चे ने जब बताया कि सब कुछ वैसा ही है! और तो और उस मिठाई की दुकान का नाम अब भी वही है, बस उस पर एक बड़ा–सा बोर्ड लग गया है। यह सुनते ही उन बुजुर्ग की आँखें भर आईं। उन्हें मुश्किल से यकीन हुआ कि जैन धर्मशाला भी जस की तस है। और आज भी लोग उसे जैन धर्मशाला के नाम से ही जानते हैं।

जाने से पहले की रात बच्चे और भोपाल के लोग जमकर नाचे। भोपाल में इन बच्चों की मेज़बानी आरूषि नामक संस्था ने की। यह संस्था शारीरिक चुनौतियाँ झेल रहे बच्चों के लिए काम करती है।

''तुम भी हमारे यहाँ ज़रूर आना!'' ''तुम अब कब आओगे!'' जैसी तमाम इच्छाओं के साथ भोपाल से हज़ारों लोगों ने विदाई दी।

रपट : अनिल मुद्गल



भंवरगढ़ में विज्ञान मेला हुआ!



एक संस्था है राजस्थान में 'दूसरा दशक'! यह संस्था उन बच्चों के लिए काम करती है जो अपनी उम्र के पहले दस साल पार करके दूसरे दशक में हैं। ग्यारह से बीस साल के बच्चों और युवाओं के लिए संस्था की मुहिम यह है कि गाँव-गाँव में इस उम्र के बच्चों, किशोरों और युवाओं को सक्रिय, समझदार और सचेत इंसान बनने में मदद की जाए। उन्हें तरह-तरह के अवसर दिए जाएँ। कई बातें जानने, अनुभव करने के मौके मिलें ... आदि।



इसी कोशिश में राजस्थान के भंवरगढ़ में 26 से 30 दिसंबर, 2004 तक एक विज्ञान मेले का आयोजन हुआ। मेले में आसपास के इलाकों से आए सैकड़ों बच्चों ने भाग लिया। चार दिन के इस मेले में ज्ञान-विज्ञान की बातें और प्रयोग आकर्षण का केन्द्र रहे। इसमें बच्चों ने पंचायती राज और खेती जैसे कई गम्भीर विषयों पर भी बातचीत की।

मेला परिसर में कई स्टॉल थे। इन स्टॉलों पर 'करके सीखो' की पद्धति पर गतिविधियों की व्यवस्था की गई थी। बच्चों ने विज्ञान के खूब प्रयोग किए। ओरेगैमी के स्टॉल पर कागज़ की टोपी, फूल तथा और भी कई आकर्षक चीज़ें बनाना सीखा। गणित की प्रयोगशाला भी मेले में थी। इसमें गणित को सरलता से समझने के लिए कई तरह की गतिविधियाँ की गईं। मेले में एक पुस्तकालय भी था। इसमें बच्चों ने किताबें पढ़ने का आनंद लिया। चित्रकला और कठपुतली बनाने का भी मौका मिला।

चुनाव का अलख जगाते बच्चे...



चकमक क्लब खातेगाँव के बच्चों ने पिछले दिनों नुक्कड़ नाटक किए। इन नाटकों का मकसद पंचायत चुनाव के बारे में लोगों को सचेत करना था। साथ ही पंचायत चुनाव से जुड़े कई पहलुओं पर भी यहाँ चर्चा हुई। आचार संहिता क्या होती है? चुनाव कौन लड़ सकता है? गड़बड़ी होने पर किसे शिकायत करनी चाहिए? जैसे तमाम मसलों पर बच्चों ने बातचीत की। बीस पंचायतों में नुक्कड़ नाटकों को चार हज़ार से ज़्यादा लोगों ने देखा।



हलकी पीली-सी गेंद!
नहीं भाई ये हैं अंडे।
अपने आकार से कई गुना बड़े दिख रहे हैं ये।
मगर हैं किसके?



यह है हरी-भूरी सी इल्ली। अभी कुछेक हफ्तों यह पत्तियाँ खाकर बढ़ेगी।

अंडे से तितली



इल्ली ने खुद को पेड़ के तने से बाँध लिया है। इसका शरीर एक तरह का धागा बनाता है। जो इसके शरीर को लपेट लेता है।
इसे कोया या कोकून कहते हैं। लम्बे समय तक इसे इसी घर में सोना है। और जब जागेगी तो...



कोकून को तोड़कर कौन निकला?
एक बड़ी इल्ली? नहीं।
सोई तो इल्ली थी पर जागी
छह लम्बी टाँगों और सामने के
दो एंटीना वाली तितली।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



सारा वासित, पहली, गुड़गाँव, हरियाणा

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना